

# تنوير ادب

مرتب: محمد اسرار



# Tanveer -e- Adab

First Edition

By: Prof. Mohd. Asrar

پروفیسر محمد اسرار فی الوقت  
سیٹھ کیسری مل پوروال کالج کامٹی کے شعبہ اردو  
میں بحیثیت اسٹنٹ پروفیسر اپنی خدمات انجام  
دے رہے ہیں۔ اس کے علاوہ کئی ادبی و سماجی  
تنظیموں سے وابستہ ہیں۔ شائستہ انداز میں گفتگو  
اور تعلیمی و علمی لیاقتوں کی وجہ سے طلبہ میں مقبول  
ہیں۔ متعدد نیشنل سمینار میں آپ نے تحقیقی مقالے  
پیش کئے ہیں علاوہ ازیں مختلف ادبی جرائد و رسائل  
میں ان کے مضامین شائع ہوتے رہتے ہیں۔

محمد عامر آفاق

**ALFAAZ PUBLICATION**

A Unit of VMMRDES

(Government of Maharashtra Registered

Reg. No.1852300311564012)

Phutana Oli, Kamptee - 441001, Dist. Nagpur Mob.: 07721877941



9 789388 093071

قیمت - 65/- روپے

Cover : Parvez 959559073



9 789388 093071

- کتاب کا نام : تصویر ادب  
ایڈیشن : اول  
مرتب : محمد اسرار  
ناشر : الفاظ پہلی کیشن، کامٹی  
قیمت : 65 روپے  
صفحات : 72  
تعداد : 500  
مطبع : ودربھہ ہندی اردو پرنٹنگ پریس، کامٹی  
کمپوزنگ : احفاظ اختر  
سرورق : پرویز احمد  
سن اشاعت : 2018ء  
پتہ : "نفیس و لاپلاٹ نمبر 2687-16/2  
رانا کرشنا سوسائٹی، نزد وائر ٹینک،  
نیو ایر کھیڑا، کامٹی۔ 441001 (ضلع) مانا پور (مہاراشٹر)  
موبائل نمبر: 7276380421 / 9822724276

**PYASI SABILEIN**  
(Stories)  
by  
**Rajeev Parkash Sahir**



**EDUCATIONAL  
PUBLISHING HOUSE**  
New Delhi , INDIA

ISBN 978-93-87539-91-4



978-93-87539-91-4

[www.ephbooks.com](http://www.ephbooks.com)

मराठी साहित्यात वि. बा. शिरवाडकराचे साहित्य : एक दृष्टिक्षेप -डॉ. लता खापरे (जाने)	148
संत एकनाथांची भासडे : एक दृष्टिक्षेप -प्रा. डॉ. विनोद उत्तमराव भालेराव	151
दूक संवाद प्रक्रीयेत ललीत कलांची प्रखर भूमिका : एक अभ्यास -डॉ. मुक्तादेवी प्रशांत मोहिते	154
'मुखवटा' अबोल संवाद साधणारे माध्यम... -सदानंद चौधरी	159
मराठी साहित्य आणि जीवनमूल्ये -डॉ. अमृता इंदूरकर	163
नव्वदोतरी मराठी ग्रामीण कवितेतून प्रगटणारे शेतकरी जीवन -प्रा. डॉ. राम चौधरी	169
गांधीवाद आणि मराठी साहित्य -डॉ. सरयू तायवाडे	175
जैत-रे-जैत -हर्षल गेडाम	178

### उर्दू

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ और ऊर्दु अदब -डॉ. सरोशा नसरीन काशी	184
हिंदुस्तानी कौमी शायर : जोश मलीह आबादी -डॉ. रेशमा परवीन	189
✓ उर्दू ज़बान में मोहम्मद असदुल्लाह की इन्शाईया निगारी -डॉ. अज़हर अबरार	194
हिन्दुस्तानी अदब की खुसुसियात -डॉ. समीर कबीर	198
ऊर्दू का एक अज़ीम अवामी शायर : नज़ीर अकबर आबादी -डॉ. नुसरत मीनू	203
भारतीयता और राष्ट्रीयता -सानमितरा डी. नवघडे	207
हिन्दुस्तानी अदब और जिंदगी की कदरें -डॉ. तरन्नुम नियाज़ शेख	211
✓ उर्दू-नज़्म व नस्र के चंद अहम शायर व अदीब -मोहम्मद असरार	216

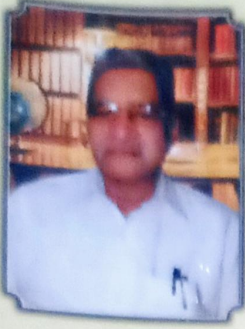
## उर्दू ज़बान में मोहम्मद असदुल्लाह की इन्शाईया निगारी

डॉ. अज़हर अब्बार

डॉ. मोहम्मद असदुल्लाह का नाम आते ही इन्शाईया का तसव्युर हमारे जेहें में एक संजीदा नवजवान की तस्वीर उभारता है जो कुदरत के कारखाने में बिखरी हुई अश्या पर गौरो-खोस तो करता है मगर ज़ब्बात की रौ में बहता नहीं बल्के तवाजुन के साथ अपना रद्दे-अमल जाहिर करता है। मोहम्मद असदुल्लाह की तहरीरें जिनकी बदौलत उन्हें बर्रसगीर में एक इन्शाईया निगार की हैसियत से पहचाना गया। आम तौर पर हल्की फुल्की तहरीरें, जिन में रोज़ मर्राह जिन्दगी के तजरबात व मुशाहेदात को मुसन्निफ अपनी शख़सियत के हवाले से शगुफता अन्दाज़ में पेश करता है। इन्शाईया के नाम से मोसूम की जाती हैं। इस सिन्फ की फन्नी लताफतों का शऊर आम ना होने के सबब हर ज़रीफाना तहरीर को इन्शाईये के ज़मरे में शामिल किया जाता है।

अँग्रेज़ी मज़मून निगारी की वह रिवायत जिसने आलमी अदब को बेकन, अब्राहम कावली, विलियम हज़ल्ट, चार्लस लेम्ब, रिचर्ड स्टील, जोज़फ एडिसन, जानसन, अल्फा ऑफ दी पिल्लो, चस्टरटन, गोल्ड इस्मिथ वगैरा अदीबों की एक कहकशाँ से रुशनास करवाया, इसकी बुनियाद फ्राँस में मानतीन ने रखी थी। एहद-ए-सर सैयद के इन्शापरदाज़ों ने उनही खुतूत पर उर्दू में जबा आजमाई की इस सिलसिले को डॉ. वज़ीर आगा ने ना सिर्फ आगे बढ़ाया बल्के इन्शाईया निगारी को एक तहरीक की शकल अता की। उनके मशहूर जरीदी माहनामा 'औराक' में नए लिखने वालों ने इस नौखीज़ सिन्फ को अपनाकर काबिल-ए-क़दर तहरीरें पेश कीं। आज इस सिन्फ में तवा आजमाई करने वालों की तादाद तफ़रीबन सौ बताई जाती है। मोहम्मद असदुल्लाह भी इस काफले में शामिल हैं। भारत में बोहोत कम लोगों ने इस किस्म के मज़ामीन तहरीर किये हैं।

मोहम्मद असदुल्लाह के इन्शाईयों का अब्बलीन मज़्मूआ, 'बूढ़े के रोल में' 1991 में मन्ज़र-ए-आम पर आया था। माहनामा 'औराक' और दीगर रसाईल में शाए होने वाली इन तहरीरों में तफ़रीबन सिन्फ मज़ामीन 'औराक' और दीगर रसाईल में शाए होने ज़रूरी नहीं हुए। मोसूफ ने ना सिर्फ इन्शाईया को तहकीक का मौजू बनाकर उनरावती युनिवर्सिटी से डाक्टरेट की डिग्री हासिल की बल्के इन्शाईया के तारीखी पद-मन्ज़र और मौजूदा सूरते-हाल का अहाता किया गया है। इसी के साथ उनकी किताब 'डुबल रोल' शाए हुई जिस में उन्होंने अपने तन्ज़िया व मज़ाहिया मज़ामीन और इन्शाईयों को जमा करके इन दोनों अस्नाफ को वाक़ायदा तौर पर बरतने वालों जर्दू की अस्नाफ-ए-सुखन में इन्शाईये को वाक़ायदा तौर पर बरतने वालों नमूने कदीम नसर में दिखाई देते हैं। इन्शाईये को वाक़ायदा तौर पर बरतने वालों में डॉ. वज़ीर आगा का नाम सरे-फहरिस्त रखा जा सकता है। उन्होंने इन्शाईया निगारी के परदाख्त के लिये एक तहरीक चलाई फिर उसके बाद तो उर्दू अदब में इन्शाईये बड़ी तादाद में लिखे गए और अब तो इन्शाईया निगारों की एक बड़ी खेप देखी जा सकती है। इन्शाईया का तसव्युर वाज़ेह हो चुका है और यह खयाल के इन्शाईया एक मक्सदी सिन्फ है बिल्कुल ही ख़ाम है। कई बार इन्शाईया के मौजूआत इन्शाईया निगार अपनी ज़ात के हवाले से जाहिर करता है इस लिये इसमें हिन्दुस्तान के इन्शाईया निगारों में एक इम्तेयाज़ी हैसियत रखते हैं। मोसूफ ने आप मैदान-ए-इन्शाईया निगारी में एक इम्तेयाज़ी हैसियत रखते हैं। मोसूफ ने "इन्शाईया निगारी के सुनहरे मुस्तक़िबल और उसकी नशू-व-नुमा के लिये एक अहम काम अन्जाम दिया है। आपके यूँ तो मुताअदद इन्शाईये शाए होकर दादो-तहसीन हासिल कर चुके हैं जैसे : 'बूढ़े के रोल में', 'नोट', 'ब्लेक बोर्ड', 'दूसरा टिकट' वगैरह लेकिन 'बुखार' यह इन्शाईया अपने आप में मुन्फरिद खुसुसियत का हामिल है और इन्शाईया निगारी के उसूलो-ज़वाबित पर मुकम्मल गामज़ून नज़र आता है। इन्सान ने जब से शऊर शख़्स की चाप, कोई अन्जाना सा एहसास मेहसूस करता है। इन्सान ने जब से शऊर की देहलीज़ पर क़दम रखा उसे यह मेहसूस होता रहा के वह एक के बजाए दो हैं। एक जाहिर में और दूसरा बातिन में कहीं छुपा बैठा है जो कभी-कभी अन्दर से निकल कर हमें झिन्झोड़ता है, ऐहसासे-ज़िम्मेदारी से आगाह कराता है और वोह सब कुछ करवाना चाहता है जिन बातों की बस हम ख़्वाहिश ही लिये बैठे थे मगर उस इन्सान को हम अपने जिस्म के चौखटे में सारी उमर ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं।



## Talash - E - Paiman Wakeel Najeeb

وکیل نجیب کا نیا تھر یلر ناول "تلاش پیہم"

ایم مبین



وکیل نجیب، انسان کی فطرت سے اچھی طرح واقف ہیں۔ انہوں نے اپنی عمر کا بیشتر حصہ درس و تدریس میں گزارا ہے، اور اس طرح وہ بچوں کے کافی قریب رہے ہیں۔ اس وجہ سے وہ بچوں کی جبلت فطرت سے اچھی طرح واقف ہیں۔ انہیں اس بات کا بھی علم ہے کہ یہ نہ صرف بچوں بلکہ انسانوں کی جبلت فطرت ہے۔

اس لیے وہ جب بھی قلم اٹھاتے ہیں تو وہ اپنی تحریروں میں اس بات کا خصوصی طور پر خیال رکھتے ہیں کہ ان میں تجسس کا عنصر ضرور موجود ہو یا ان کی تحریر کی روانی قارئین جو ۱۰ سال کے بچے سے ۸۰ سال کے بوڑھے ہیں، کے دل میں تجسس پیدا کرے اور وہ ان کی تحریر کی آخری سطر بھی پڑھنے کے لیے مجبور ہو جائیں۔

وکیل نجیب کی تازہ تخلیق ناول "تلاش پیہم" بھی اس کی ایک عمدہ مثال ہے۔ وکیل نجیب بلاشبہ ادیب اطفال ہیں۔ انہوں نے بچوں کے لیے بہت کچھ لکھا ہے۔ بچوں کے ادب کے لیے ان کی خدمات کے طفیل ہی ملک کی باوقار ساہتیہ اکادمی جیسی تنظیم کو انہیں بچوں کے ادب میں گراں قدر خدمات کے لئے ساہتیہ اکادمی کا ادب اطفال سے نواز کر ان کی پذیرائی کرنی پڑی۔ اس کے علاوہ مہاراشٹر، یوپی، بہار، بنگال ریاستوں کی اردو اکادمیوں نے بھی ان کی کتابوں پر انھیں ایوارڈ سے نواز کر ان کی پذیرائی کی ہے۔ ان کی کتابوں کی اہم بات یہ ہے کہ پھلے ہی وہ ادب اطفال کے زمرے میں آئے لیکن بچوں کے ساتھ ساتھ بڑے بھی انہیں شوق سے پڑھتے ہیں۔ ان کے پاس جو کہانی بننے کا فن ہے اس میں وہ تخیل اور تجسس کے خام مال کا استعمال کر کے اتنی خوبصورت کہانیاں بنتے ہیں کہ ایک بار انہیں قاری پڑھنا شروع کرتا ہے اسے ختم کر کے ہی چین لیتا ہے، اور وکیل نجیب کے بیشتر قارئین کو ان سے یہ شکایت ہے کہ وہ اپنی جادوئی تحریروں سے انہیں کچھ اس طرح باندھ کر رکھتے ہیں کہ وہ انہیں ایک بار پڑھنا شروع کرتے ہیں تو ایک ہی نشست میں ختم کر کے دم لیتے ہیں۔ پھر وہ چاہے ۱۰۰ صفحات کا ناول "میجا" ہو یا پھر ۴۰۰ صفحات سے زائد کے ناول "کمپیوٹران" یا "سیاہ رات" ہوں۔

"تلاش پیہم" میں بھی وکیل نجیب نے اسی اسلوب کا استعمال کیا ہے، اور اس کو جو بھی قاری پڑھنا شروع کرے گا وہ دنیا و مافیہا سے بے خبر ہو کر اسے پڑھتا ہی چلا جائے گا، اور اسے ختم کر کے ہی دم لے گا۔ وہ ختم کرنا بھی اس کے بس میں نہیں ہوتا ہے۔ قارئین اس کے مطالعہ میں کچھ ایسا کھوجتے ہیں کہ وہ کہانی کب ختم ہوتی ہیں اسے احساس ہی نہیں ہوتا ہے۔



**ALFAZ PUBLICATION**

Unit of

Vidarbha Minority Multipurpose Rural  
Development Educational Society, Nagpur



₹ 150/-

### تیسرا آسمان: افسانہ تنقید

- |     |                  |  |   |
|-----|------------------|--|---|
| 57  | رفیق جعفر        | سہمتی سلگتی تعبیریں                                | ○ |
| 61  | نذیر فتح پوری    | ڈاکٹر جاوید حسین شارب                              | ○ |
| 63  | دیپک بدکی        | ڈاکٹر پالوجی کا افسانوی ادب                        | ○ |
| 70  | منظور وقار       | شارب کی سہمتی سلگتی تعبیریں                        | ○ |
| 73  | ڈاکٹر رضوان      | جدید فکر کے حامل افسانہ نگار                       | ○ |
| 75  | ڈاکٹر اظہر ابرار | سہمتی سلگتی تعبیریں۔ ایک تجزیہ                     | ○ |
| 82  | ڈاکٹر محمد ارشد  | شارب کی افسانوں میں سلگتی تعبیریں: ڈاکٹر محمد ارشد | ○ |
| 95  | چاندا کبر        | سہمتی سلگتی تعبیریں تبصرہ/تجزیہ                    | ○ |
| 97  | خیال اثر         | اصلاحی ادب کا خوگر                                 | ○ |
| 102 | غلام ثاقب        | شارب کے تائیدی کردار                               | ○ |

### چوتھا آسمان: افسانچہ تنقید

- |     |                    |                               |   |
|-----|--------------------|-------------------------------|---|
| 113 | سعید رحمانی        | افسانچوں کا مجموعہ ”بے ساختہ“ | ○ |
| 115 | ڈاکٹر عظیم راہی    | ”بے ساختہ“ پر ایک نظر         | ○ |
| 118 | رونق جمال          | افسانچے کو شارب کرنے والا..   | ○ |
| 121 | نذیر احمد یوسفی    | بے ساختہ۔ ایک تاثر            | ○ |
| 123 | زفر کھوکھر         | بے ساختہ، ایک مطالعہ          | ○ |
| 127 | حبیب سیفی          | ”بے ساختہ“ افسانچوں کا مطالعہ | ○ |
| 140 | شمس الضحیٰ اسرائیل | بے ساختہ اور ڈاکٹر جاوید شارب | ○ |



# विपणन व्यवस्थापन

प्रा. डॉ. इफ्तेखार हुसैन



# विपणन व्यवस्थापन

**प्रा. डॉ. इफ्तेखार हुसैन**

एम.कॉम, एम.ए. (अर्थशास्त्र), एम.फिल, पीएच.डी.

वाणिज्य विभाग प्रमुख

सेठ केसरीमल पोरवाल महाविद्यालय, कामठी जिला, नागपुर (महाराष्ट्र)

**स्वास्तिक पब्लिकेशन्स**

नयी दिल्ली-110002

*Published in India by*

**स्वास्तिक पब्लिकेशन्स**

213, वरदान हाऊस, 7/28, अंसारी रोड,  
दरियागंज, नयी दिल्ली - 110002

दूरभाष : 9968482939

ई-मेल : swastik\_books@yahoo.com

**Regd. Office:**

31 गली न0 1, ए ब्लाक, पाकेट-5  
सोनिया विहार, दिल्ली - 110 090

दूरभाष : 989942604

ई-मेल : swastik\_books@yahoo.com

**विपणन व्यवस्थापन**

ISBN : 978-93-87367-64-7

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2019

---


मुद्रक

ग्लोबल प्रिंटिंग सर्विसेज, दिल्ली

**Read To Lead**

# Management Process



  
THAKUR PUBLICATION PVT. LTD.  
NAGPUR

**Dr. Hitesh Arjun Kalyani**  
**Dr. Iftekhar R. Hussain**

# MANAGEMENT PROCESS

---

B.COM, SEMESTER - V

According to the new Syllabus of  
'Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University'

***Dr. Hitesh Arjun Kalyani***

M.Com, M.A.(Eco.), MBA, M.Ed., M.Phil (Comm.),  
NET(Comm.), Ph.D.(Comm.)

Assistant Professor,  
S.N. Mor College, Tumsar

***Dr. Iftekhhar R. Hussain***

M.A.(Eco.), M.Com, M.Phil, Ph.D

Assistant Professor,  
S. K. Porwal College of Arts, Science & Commerce, Nagpur

*Books are Available for Online Purchase at: [tppl.org.in](http://tppl.org.in)*



**THAKUR PUBLICATION PVT. LTD., NAGPUR**

---

\* Lucknow \* Meerut \* Bengaluru \* Hyderabad \* Jaipur \* Chennai \*  
\* Ahmedabad \* Pune \* Bhubaneswar \* Jalandhar \* Rohtak \* Bhopal \* Kerala \*

**Edition 2018**

**Copyright © All Rights Reserved**

This book is sole subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior written consent, in any form of binding or cover, other than that in which it is published and without including a similar condition. This condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above, no part of the publication may be reproduced, stored in or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise), without the prior written permission of both the copyright owner and the below mentioned publisher of this book.

Published by :

**Thakur Publication Pvt. Ltd.**

Plot No. 109, Nawa Nakash, Behind Jaiswal Restaurant,  
Near Choti Maszid, Nagpur-440017. Mob. 09595029116.

**Website:** [www.tppl.org.in](http://www.tppl.org.in) **Email:** [thakurpublication@gmail.com](mailto:thakurpublication@gmail.com)

**Head Office:** FF-107, Adarsh Complex, Engineering College  
Crossing, Opp. Allahabad Bank, Lucknow-21.  
Ph. 0522-3296934, 09235318594/22/9335318517.

### ***Retailers/Distributors***

#### **NAGPUR**

1. **Book World**, Swami Samarth Complex, Opp. Home Mahila Sobhagruh 28 North Bazaar Road, Gokul Peth, Nagpur-440010. Ph. 0712-2562999, Mo 9422864426.
2. **Central Book Shop**, Near Jhanshi Rani Chowk, Nagpur. Mob. 09823073969.
3. **Laxmi Pustakalaya and Stationers**, Kelibagh Road, Mahal, Nagpur-44003. Ph. 0712-2720379, 2727354.
4. **Pragati Book Depot**, Near Rajvilas Talkies, Mahal, Nagpur. Ph. 272135. Mob. 9823030242.
5. **Renuka Book Depot**, Near Rajvilas Talkies, Mahal, Nagpur. Mo 09765406133.
6. **Venus Book Centre**, Opp. Rajaram Library, Ram Nagar Road, Mangal Arcade, Dharmapeth Extn., Nagpur. Ph. 2520781, 2536314.
7. **Vijay Book Depot**, 477, Gola Chakka Marg, Near Karachi Jeneral Store Nagpur. Mob. 9122534217.

#### **WARDHA**

8. **Gandhi Book Depot**, Arui Naka Square, Near Sai Mandir Wardha. Mo 8275285568, 9420682100, 07840979193.

#### **GONDIA**

9. **Shree Mahavir Book Depot**, Pal Chowk Rail Toli, Gondia-441601. Ph. 07182-225032.

**vidyawarta™**  
International Multilingual Research Journal

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर शिक्षण संस्था, चांदा व्दारा संचालित  
आणि गोंडवाना विद्यापीठ, गडचिरोली संलग्नित

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,  
ब्रम्हपुरी, जि.चंद्रपुर

व्दारा आयोजित

मराठी समाजशास्त्र परिषदेचे २९ वे राष्ट्रीय अधिवेशन

दि. १८ व १९ जानेवारी २०१९

**“जनसंवाद आणि सामाजिक माध्यमांचा भारतीय समाजावर प्रभाव”**

**मुख्य संपादक**

डॉ. स्निग्धा राजेश कांबळे,

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, ब्रम्हपुरी, जि. चंद्रपुर

**सहसंपादक**

डॉ. कुंदन दुफारे,

श्री. जी. सी. पा. मुनघाटे महाविद्यालय, धानोरा, जि. गडचिरोली

**संपादक मंडळ**

**डॉ. अशोक सालोटकर,**

गो. वा. महाविद्यालय, नागभीड, जि. चंद्रपुर

**डॉ. संजय कुंभारे,**

श्री गोविंदप्रभु कला, वाणिज्य महाविद्यालय,

तळोधी (बाळापुर), जि. चंद्रपुर

**प्रा. संजय चव्हाण,**

यादवराव पोशट्टीवार महाविद्यालय,

तळोधी (बाळापुर), जि. चंद्रपुर

**डॉ. विजय दिघोरे,**

भिवापूर महाविद्यालय, भिवापूर, जि. नागपूर

**प्रा. बालाजी दमकोंडवार,**

नेवजाबाई हितकारीनी महाविद्यालय,

ब्रम्हपुरी, जि. चंद्रपुर

**डॉ. रविंद्र विखार,**

श्री गोविंदराव मुनघाटे महाविद्यालय,

कुरखेडा, जि. गडचिरोली



**Harshwardhan Publication Pvt. Ltd.**

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / [www.vidyawarta.com](http://www.vidyawarta.com)

❖ विद्यावार्ता: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal | Impact Factor 5.131 (IJIIF)

65) ग्रामिण समाजातील विद्यार्थी, प्रसारमाध्यमे आणि सोशल मिडीयाचा परिणाम डॉ. निलीमा विजयराव दवने	280
66) सामाजिक चळवळीत प्रसार माध्यमांची भूमिका प्रा. प्रमोद चंद्रभान वानखेडे, वर्धा	284
67) प्रसार माध्यमे आणि बदलते जीवन प्रवाह डॉ. प्रमोद देविदास पाटील, नागपूर	288
68) लोकशाही राज्यव्यवस्था व प्रसारमाध्यमे प्रा. सोमा पी. गोंडाने, चंद्रपूर	290
69) कुटुंब विवाह व आप्तसंबंधावर सामाजिक माध्यमांचा परिणाम टी. एस. कोसे, सौदंड	293
70) नव्या जागतिकीकरण उदारीकरण व खाजगीकरण व्यवस्थेच्या निर्मितीत... प्रा. डॉ. होमराज टी. राठोड, यवतमाळ	296
71) प्रसारमाध्यमे आणि सामाजिक जागृती प्रा. डॉ. माया बापूराव मसराम, चंद्रपूर	300
72) सामाजिक समस्यांच्या उदयात माध्यमांची भूमिका प्रा. मनिषा भ. किर्तने, वाशिम	304
73) जनसंवाद आणि सामाजिक माध्यमांचे सैध्दांतिक दृष्टिकोन सहा.प्रा. महेंद्र एन. कुंभारे, चंद्रपूर	305
74) प्रसारमाध्यमे आणि बदलते जीवनप्रवाह राजू बुरीले, नागपूर	308
75) भारतातील लिंगभाव जाती व धर्म आणि माध्यमांचा हस्तक्षेप प्रा. डॉ. संजय एच. बाळबुध्दे, गडचिरोली	312
76) प्रसारमाध्यमे आणि बदलते जिवनप्रवाह प्रा. डॉ. समृद्धी टापरे, नागपूर	313
77) प्रसार माध्यमे आणि बदलते प्रवाह लक्ष्मी गंरूपसाद शर्मा, चद्रपुर	316



होतो.

जातीभेद आंतरजातीय विवाहास मान्यता देणारे केवळ ०२ टक्के कुटुंब आहेत. आंतरजातीय विवाहास विरोध करणाऱ्या प्रवृत्तीमुळे कुटुंबात कलह निर्माण होतो कुटुंबाला बहिस्कृत केले जाते. ऑनरकिलिंग सारखे गंभिर सामाजिक प्रश्न निर्माण होतात. त्यातून कुटुंबातीलसामाजिक प्रतिष्ठा धोक्यात येत आहे.

लोकशाही मुल्यांची आणि आदर्शांची पेरणी आणि उभारणी करून समताधिष्ठीत समाज निर्माण करण्याची क्षमता प्रसार माध्यमामध्ये आहे पण अलिकडे प्रसार माध्यमाच्या जबाबदाऱ्या आणि बदलत्या भूमिकांचा प्रश्न ऐरणीवर आला आहे. माध्यमांचे नैतिक विश्व बदलेले आहे. प्रसार माध्यमे आणि वास्तव यांचा संबंध तुटत चालला आहे. माहितीची वाहक असलेली जनसंवाद आणि सामाजिक माध्यमे, सामाजिक बांधिकी दिसत नाहीत. व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्वीटर इन्स्टाग्राम या सारख्या समाज माध्यमांच्या आभाशी जगात व्यक्ती अधिकाधिक गुरफटत चालली आहे. माध्यमे आणि समाजमाध्यमांद्वारे मुद्दाम होवून पसरविल्या जाणाऱ्या अफवा फेक व्हिडीओ, फेक फोटो, फेक न्युज खोळसाड बातम्या व्यक्ती व समाजाची दिशाभूलकरून समाजाचे भ्रुविकरण करण्यात हातभार लावित आहेत. माध्यमे व समाज माध्यमांचे महत्व अनन्य साधारण असेच आहे परंतु आज हिच माध्यमे व समाज मध्यमे जातीधर्माच्या नावावर समाजात विसंवाद निर्माण करण्यासाठी कारणीभूत ठरत आहेत. त्यामुळे देशाची एकता व अखंडता धोक्यात येत आहे.

**संदर्भग्रंथ :-**

१. प्रा. घाटोळे रा.ना. — ग्रामिण समाजशास्त्र व समुदाय विकास श्री मंगेश प्रकाशन नागपूर १९९४.
२. डॉ. बाबु कन्हाडे — आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र
३. डॉ. डी. टी. गजभिये — सामाजिक समस्या
४. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर — जाती निर्मुलन विषयक विचार २० मार्च १९२७.
५. डॉ. निरगुळीकर — प्रसार माध्यमे

76

## प्रसारमाध्यमे आणि बदलते जिवनप्रवाह

प्रा. डॉ. समृद्धी टापरे

समाजशास्त्र विभाग,

डॉ. मधुकरराव वासनिक पी.डब्ल्यू.एस. कला व  
वाणिज्य महाविद्यालय, कामठी रोड, नागपूर

\*\*\*\*\*

आजचं युग हे स्पर्धेचे युग, संवाद क्रांतीचे युग.....शास्त्रीय युग.....म्हणून ओळखलं जात असले तरी यशाची पहिली पायरी म्हणून माहितीचे स्थान आजही कायम आहे. शास्त्रातील अनेक नवनव्या शोधामुळे जग लहान बनत चालले आहे. संवाद क्रांतीमुळे प्रसारमाध्यमांचे महत्व अधिकच वाढले आहे. आजच्या या आधुनिक युगातही ज्ञान, माहिती, संपर्क आणि प्रचार, प्रसाराच्या माध्यमातून अधिकाधिकांचे अधिकत्तम कल्याण साध्य करण्यासाठी तसेच अधिकाधिकांना अधिकाधिकांशी जोडण्यासाठी व संबंधीत घटकांत परस्परविषयी विश्वसाहर्ता निर्माण करण्याबरोबरच सामुहीक विकासाच्या योजना अखेरच्या घटकांपर्यंत पोहचविण्यात, सामाजिक शिक्षण साकारण्यात, यशाचा उल्लेख सुचविण्यात तसेच लोकशाही शासन प्रणाली अधिक सक्षम करण्यासाठी भारतीय प्रचार माध्यमांची भूमिका प्रारंभापासूनच महत्वपूर्ण राहिली आहे.

भारतीय स्वातंत्र्योत्तर काळानंतर भारतीय संविधानाने प्रदान केलेल्या मुलभूत हक्कापेक्षा अभिव्यक्ती स्वातंत्र्याचा लाभ होऊन एक नवी जीवनदृष्टी लाभल्यामुळे भारतीय प्रचार माध्यमांनी आपले स्थान निर्वावाद निर्माण केले. ब्रिटीश राजवटीमध्ये भारतात गोपनियतेचा कायदा लागू केला गेला होता या कायदामुळे प्रशासकीय स्तरावरील विविध प्रकारच्या माहितीपासून प्रसार माध्यमांना व नागरिकांना वंचित रहावं लागत होते. आता भारत सरकारने संपूर्ण देशात जनतेला माहितीचा अधिकार प्रदान केल्यामुळे भारतीय प्रसार माध्यमांचे स्थान आणि भारतातील नागरिकांचे मुलभूत हक्क अधिक मजबूत झाले आहेत. प्रशासकीय

ISBN No. 978-93-85162-80-0



**UGC Sponsored**

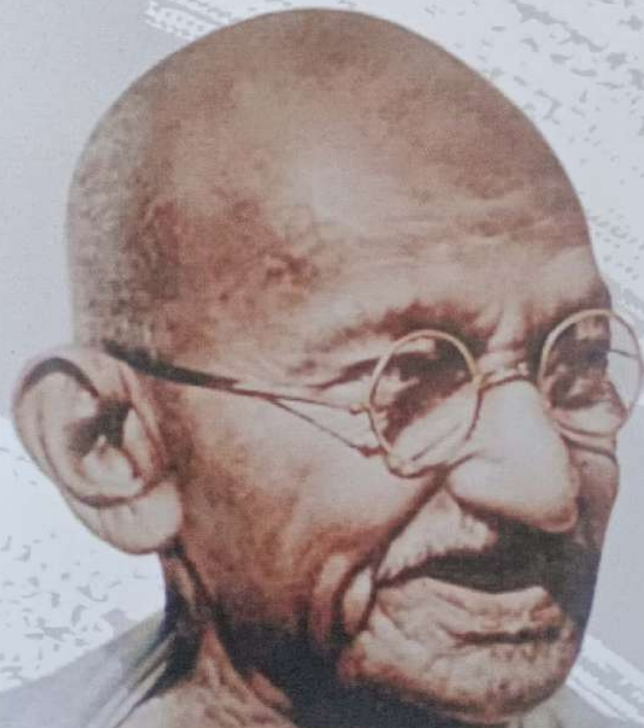
**ONE DAY INTERDISCIPLINARY  
INTERNATIONAL CONFERENCE**

**on**

**“Beyond Boundaries : Gandhian Vision in  
the Age of Globalization”**

**on**

**24th March, 2018**



**Organized by**

**Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya,  
Wardha, Maharashtra (India)**

**&**

**Gandhi Study Centre**

**New Arts, Commerce & Science College,  
Wardha, Maharashtra (India) - 442001**

27	डॉ.सो.पुष्पा सुभाष तायडे	महात्मा गांधीचा अनासक्तीयोग	85
28	प्रा.डॉ.शिंदे आर.डी.	कलजयी पत्रकार : महात्मा गांधी	90
29	प्रा. राहुल लभाने	राष्ट्रपिता महात्मा गांधी यांचे अहिंसा, सत्याग्रह व खादी संदर्भात मौलिक विचार.	94
30	प्रा. राजूभा. खरडे	खादीचे जनक महात्मा गांधी	99
31	प्रा. रमेश नरसिंग थोरात,	महात्मा गांधीजींचे सत्याग्रह विषयक विचार	103
32	कु. रेणुका प्रकाशराव हावके	राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आणि अस्पृश्यता	105
33	प्रा डॉ.साईनाथ शेटोड	महात्मा गांधींचे महिला हक्कांविषयीचे विचार व कार्य	107
34	डॉ. समृद्धी मदन टापरे	गांधीजींचे विचार : स्वयंसेवी संस्थांचे योगदान- एक अध्ययन	110
35	प्रा. संजय दौ. बेले	महात्मा गांधीजींच्या दृष्टीकोणातून ग्रामीण विकासा संबंधीचे आर्थिक विचार	112
36	प्रा.डॉ. संतोषतुकाराम कदम	"महात्मा गांधीचे आर्थिक विचार व आजची परिस्थिती"	116
37	डॉ. संतोषबाबुराव कु-हे	म. गांधीजींच्या ग्रामस्वराज्याची संकल्पना आणि ग्रामीण विकास	120
38	प्रा. सिध्दार्थबी. टेंभूर्णे	ग्रामीण विकासात महात्मा गांधीजीची भूमिका	124
39	डॉ. एस. के. खंगार	महात्मा गांधी आणि डॉ. आंबेडकर यांचे विचार	127
40	डॉ. सुर्यकांत महादेवराव कापशीकर	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि महात्मा गांधी संबंध: ऐतिहासिक मूल्यमापन	129
41	सुषमा वि. आदमने	गांधी विचार : खादी , ग्रामोद्योगाची सार्थकता	133
42	प्रा. वर्षा अ तिडके	स्त्री ख-या अर्थानेगांधी युगातच मुक्त झाली.	137
43	सहा.प्रा. विद्या के. भैसारे	ग्रामीण विकासात महात्मा गांधीजींच्या सर्वोदयाची विचारधारा	140
44	प्रा. विषाखा के. मानकर	सामाजिक विकासाकरीता महात्मा गांधींचे विचार	147
45	प्रा. विवेक एस. गोर्लावार	गांधीजींचे आर्थिक नियोजन व व्यवस्थापणाबाबतमत	146
46	प्रा. यादवरावरा. गहाणे	गांधीजींचे विचार व जागतिकीकरण	149
47	प्रा. डॉ. हेमंत व्ही. मिसाळ,	गांधीजीची सत्याग्रहाची शक्ती	154
48	प्रा.मंजुषा कृ. वरफडे	कर्मयोगी गांधी	155
49	प्रा. डॉ. प्रमोद माधवराव आचेगावे	महात्मा गांधीजींच्या विचारांची प्रासंगिकता	159
50	मा. प्रमोद वा. तडस	महात्मा गांधीजींचा ग्राम विकासातील दृष्टीकोन	161
51	डॉ. रविंद्र मा. महाजन	महात्मा गांधींच्या सर्वोदय संकल्पनेतील आर्थिक व सामाजिकसमता	162
52	डॉ. सौ. शीलासंजय खेडीकर	महात्मा गांधींची नीती मुल्ये आणि अध्यात्म	164
53	डॉ वंदना प्र. पळसापुरे	महात्मा गांधी यांच्या विचारांची वर्तमानकालीन आवश्यकता	167
54	Dr.Archana Pathya	Three Pillars of Gandhian ParadigmNon Violence, Satyagrah and Khadi	169
55	डॉ. डी.एन. प्रसाद	गांधी की भाषा-नीति	177

सामाजिक सुधारणेच्या कार्यात समोर येऊन नेत्रीने कार्य करण्यास प्रवृत्त करणे.

#### स्वास्थ्य :

- आरोग्यासंबंधीत काही पौराणिक माहिती प्राप्त करून त्यामध्ये काही वैज्ञानिक माहिती एकत्रित करून त्यांना इतरांना पुरविण्यात, प्रशिक्षण देण्यात उपयोग करणे.
- गडचिरोली जिल्ह्यातील ग्रामिण आणि दुर्गम भागात आरोग्या संबंधीत स्वतःपुरते आणि योग्य स्वास्थ्य बनविणे.
- आरोग्यासंबंधीत जबाबदारी आणि हक्काबद्दल आदिवासी व इतर लोकांमध्ये जागरूकता निर्माण करणे.

ह्याच प्रकारे अनेक समाजसेवी संस्था आपले योगदान समाजासाठी देत आहेत. गडचिरोली जिल्ह्यातील लोकविरादरी प्रकल्प व चातगांव येथील सर्व हया संस्थेची नोंद जागतिक पातळीवर झालेली आहे.

#### संदर्भ :-

- खुरणा, पन्नालाल गांधीजीची ओळख, सुगावा प्रकाशन, पुणे, २००६.
- कोटेकर, शंता भारताचे भाष्यविधाते, श्री. साईनाथ प्रकाशन, वाणपुर, २००९.
- जोशी, शास्दा, माहत्मा गांधी (संक्षिप्त चरित्र व विचारधर) विद्याभाट्टी प्रकाशन, नागपुर, २०००
- मंगळवेढेकर, राजा, गांधीजीच्या गोष्टी, साईनाथ प्रकाशन, २०००
- कोलते, नरेश व्यावसायिक सिध्दांत आणि व्यवहार, यश प्रकाशन, २००९
- थोटे पुरुषोत्तम, समाजकार्याची मुलतत्वे, विद्या प्रकाशन, २०१०

## गांधीजीचे विचार : स्वयंसेवी संस्थांचे योगदान - एक अध्ययन

डॉ. समृद्धी मदन टापर

विद्यार्थी

Anilalokhande11@gmail.com

Anilalokhande11@9420511560

अयोध्या नगर गडचिरोली 9420511560

प्रस्तुत लेखत महात्मा गांधीजीचे विचारधारा व त्यांचे स्वयंसेवी संस्थांबाबत वी मुक्तिकारणांच्या राष्ट्रिय आंदोलनात गांधीजींनी स्त्रीयांना पुरुषांच्या बरोबरीने स्थान दिले वी दार्याभिमोचनाच्या क्षेत्रात गांधीजींनी केलेले आहे. गडचिरोली जिल्ह्यातील 'आम्ही आमच्या आरोग्यासाठी' स्वयंसेवी संस्थेच्या कार्याचा उल्लेख प्रस्तुत लेखात करण्यात आलेला आहे.

प्रस्तावना :- "आपला देश आपला आहे असे ज्या देशात सर्वांना वाटते, या देशाच्या घटनेत आपला शब्दाला किंमत आहे. देशाच्या घटनेत त्यांचाही महत्त्वाचा वाटा आहे. याचा त्यांना प्रत्यय येईल. ज्या भारतात कोणी उच्च नसेल कोणी निच नसेल. सर्व जाती धर्माचे लोक गुण्या गोविंदान राहिलेले असो नात निर्माण करण्यासाठी नी प्रयत्नांची परकाष्टा करतो. या माझ्या भारतात अस्पृश्यताचा कळकळ नाहीसा झालेला असेल. स्त्रियांना पुरुषांच्या बरोबरीने अधिकार असतील असा माझा भारत देश असावा असे माझे स्वप्न आहे." असे उदात्त विचार बापूंचे. महात्मा गांधींचे होते.

भारतात समाजसेवेची एक उज्वळ परंपरा आहे समाजसेवेसोबतच समाजकार्य हे सुद्धा प्राचीन काळापासून चालत आलेले आहे ह्याच विचारधारेतून स्वयंसेवी संस्था खेड्यापाड्यातून कार्य करित आहे. त्यांपैकीच एक गडचिरोली जिल्ह्यातील आम्ही आमच्या आरोग्यासाठी स्वयंसेवी संस्था व संस्थेचे विविध अंगी कार्य ज्या मधुन गांधीजींच्या संकल्पनेची प्रचिती येते. आम्ही आमच्या आरोग्यासाठी ह्या संस्थेची मागील 25 वर्षापासून केलेल्या कार्याबाबत माहिती सादर करण्यात आली आहे.

आम्ही आमच्या आरोग्यासाठी : आम्ही आमच्या आरोग्यासाठी ही संस्था मागील 25 वर्षापासून गडचिरोली आणि वदपूर जिल्ह्यात आदिवासी बहुल दुर्गम भागामध्ये व नागपूर शहरातील 12 वस्त्यांमध्ये कार्यरत आहे ह्या संस्थेची लोकांची समस्या जाणून त्यांच्यासोबत काम करणे व त्यांची ताकद वाढविणे ह्या पद्धतीवर विचार आहे. ह्या संस्थेचे दोन प्रमुख उद्दिष्टे खालील प्रमाणे आहेत.

1. लोकांसोबत लोकांची ताकद वाढविणारे कार्य.
2. लोकांना आपल्या संस्थेचे निवारण करण्यासाठी त्यांना आवश्यक माहिती देऊन सवलत करणे.

आम्ही आमच्या आरोग्यासाठी' ह्या संस्थेचे इ.स. 1999 मध्ये कोरची तालुक्यात संपूर्ण ग्रामविकास प्रकल्पाच्या कामाला सुरुवात झाली. प्रकल्पअंतर्गत समाजातील वेगवेगळ्या घटकातील लोक संस्थेच्या संपर्कात आले. त्यात अपंग व्यक्ती सुद्धा लक्षात आले. मात्र अपंग व्यक्तींच्या समस्या ह्या सर्वसामान्य व्यक्तीपेक्षा वेगळ्या असल्याचे संस्थेला जाणवले. म्हणून इ.स. 2000 मध्ये कोरची तालुक्यातील 15 गावांचे संचालन संवर्षेक्षण करण्यात आले. त्यानंतर संस्थेची इ.स. 2003 मध्ये कोरची व कुर्खेडा तालुक्यातील 25 गावांचे वार्षिक संवर्षेक्षण सुरू केले. ह्या सर्वेक्षणावरून संस्थेला ह्या भागातील जनतेच्या सामाजिक, आर्थिक व आरोग्यविशेषक समस्यांबद्दल महत्त्वपूर्ण माहिती प्राप्त झाली. ह्या गरजा लक्षात घेता गडचिरोली जिल्ह्यातील व्यक्ती ज्या गांव समाजाचा घटक आहे. तेथेच त्यांचे पुनर्वसन करणे हे धोरण स्वीकारून संस्थेने समाज आधारित आदिवासी पुनर्वसन' ह्या कामाला सुरुवात केली. आम्ही आमच्या आरोग्यासाठी' या संस्थाची प्रमुख उद्दिष्टे खालीलप्रमाणे आहेत.

- महिलांचे अधिकार :
- 1. संस्थेमार्फत महिलांना सामाजिक, आर्थिक, राजकीयदृष्ट्या संपत्त बनविणे.

Impact Factor – 6.625 | Special Issue – 229 (A) | February 2020 | ISSN – 2348-7143

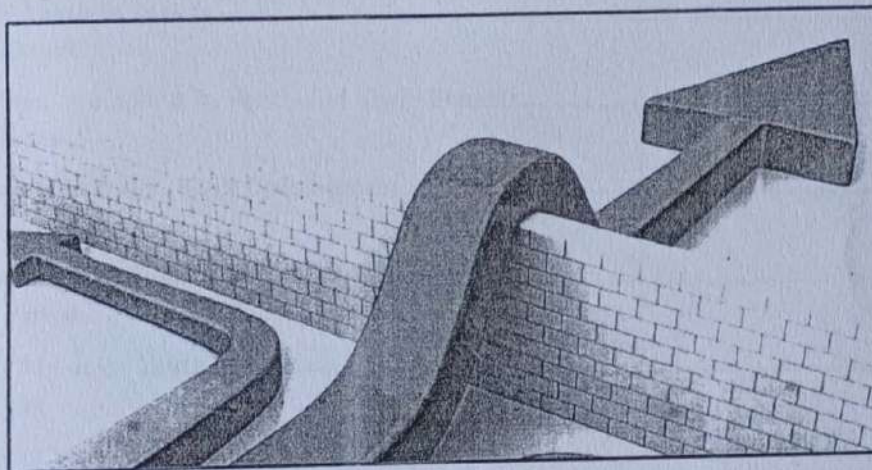
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S  
**RESEARCH JOURNEY**

Multidisciplinary International E-Research Journal

**PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL**

SPECIAL  
ISSUE  
229 (A)

# INDIAN YOUTH : CHALLENGES AND OPPORTUNITIES



- GUEST EDITOR -  
Dr. V. R. Kodape

- CHIEF EDITOR -  
Dr. Dhanraj T. Dhangar

- EXECUTIVE EDITORS -  
Dr. N. M. Chhangani  
Prof. P. S. Shirsat

For Details Visit To :  
[www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

Printed By : **PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON**

19.	Need of E-Resources in Academic Libraries.....	51
	Dr. Prakash Shirram Kolhe	
20.	Unemployment, Unrest and Youth.....	52
	Dr. Madhuri Yogendra Kopulwar	
21.	The Role of Music in Youth Culture.....	52
	Dr. Niraj Lande	
22.	Youth and Indian Musical Culture.....	56
	Prof. Dr. Rahul Kashinathrao Ekbote	
23.	Intra Generational Conflicts and Youth in Current Scenario.....	57
	Dr. Samruddhi Tapre	
24.	Importance of Physical Fitness in Youth and It's Benefits.....	59
	Prof. Dr. Vinod Kapile	
25.	Youth and ICT.....	61
	Dr. Dinesh B Raghuvanshi	
26.	Social Media and Youth.....	61
	Miss. Hema Ramaji Khedkar	
27.	Tiktok App and Indian Youth.....	61
	Parishkrit Agrawal	
28.	Criminality in Youth: Causes and Possible Solutions.....	71
	Mrs. Bhagyashri Amit Dhumale	
29.	Music: Health Resource in the Life of Youth.....	71
	Dr. D. R. Elalkar	
30.	Skill Development of Youth : Opportunities & Challenges.....	71
	Dr. Baljeet Kaur Oberio	
31.	Music Education and Youth Empowerment.....	71
	Nana Bhadke	
32.	The Importance of Reading Habit in Young Generation.....	81
	Dr. Ashalata Raman	
33.	Importance of Good Nutrients in Youth and Their Impact on Humans.....	81
	Prof. Dr. Rashmi Gajre	
34.	Challenges & Opportunities for Youth in Agriculture.....	81
	Prof. Dr. Jyoti R. Maheshwari	
35.	Challenges Faced Unemployed Youth in India.....	81
	Tushar Manohar Kotak	
36.	Youth and Confidence Level.....	91
	Dr. Mahesh C. Dabre	
37.	Modern Lifestyle and Youth.....	91
	Dr. Manasi Manojkumar Kambale	
38.	E-Commerce and its impact on Youth.....	91
	Dr. N. B. Mathpati	
39.	Nutrients and Youth.....	101
	Dr. Anjali Chandrakant Pande	

speaks, development of everything with help of music can lead to miracle.

## Intra Generational Conflicts and Youth in Current Scenario

Dr. Samruddhi Tapre  
Assistant Professor,  
Dept. of Sociology,  
S.K. Porwal College, Kamtee

### Abstract:

*In modern life, social media is developing fast. It is used by many people all over the world. Social media is especially very popular among the young. However, there are many young people who cannot control themselves and are addicted to social media. Addiction to social media has many serious effects, including poor study habits, living away from reality and bad health.*

**Key Words :** Youth, political change, nation, backbone.

### Introduction:

Intra-generational equity is different from intergenerational equity which deals with the equality among the same generations as far as the utilization of resources are concern. It includes fair utilization of global resources among the human beings of the present generation.

The concept of intra-generational equity provides rights and duties to every person of a single generation to use and take care of the renewable and non renewable resources moderately among the members of the generation. In a developing country like India the rule of intergenerational equity is applicable to certain extend, as in this kind of developing countries more resources are required for development of the country and to ensure economic stability.

Industrialization is the key for the development of these countries which requires more and more renewable and non renewable resources, in that that the legislature must enact strict environmental laws in relation to the implementation of the rules specified in the doctrine of intra-generational equity, and it must be firmly interpreted by the judiciary system of the nation.

The administration of every country must be very conscious regarding the implementation of the rules framed by the legislature in relation to the protection of environment and the laws related to the execution of the rules in respect of the intra-generational equity. The resources which are not preserved for the future generation and are available for the current generation must be equally distributed among all the members of the present generation. To a certain extend it becomes very difficult regulate those resources among all the members of the generation due to national territories, international provinces, condition of the international society and many more, but it may be done implicity.

Printed by: PRASHANT PUBLICATIONS

globalization can make things better and easier for proper implementation of the doctrine.

### 1. Causes :

#### Intragenerational Conflicts :

Intergenerational equity and intra-generational equity both requires sustainability. Proper distribution of renewable and non-renewable resources is the key of the concept of sustainable development. Where intergenerational equity tries to distribute among present and future generation; intra-generational equity deals with the distribution of resources between the members of the same generation. Due to the lack of proper execution of the doctrine of sustainable development, the present environment of the entire earth is in question, the rule of intergenerational equity and intra-generational equity must be followed to save the world from the present situation, global warming is one of the main reasons for degradation of the environment, it not only harms the environment of earth but also injures surviving ability of the live.

#### Intergenerational Conflicts :

Generation gap is a gap of communication that leads to misunderstanding and disharmony. It refers to the gap between young and old. It is about mindsets and methods and it is not one-sided. Youth is full of passion and drive and is risk-friendly. The old have wisdom and experience and they are risk-averse. So, work together.

Just passion and risk-taking are not enough; neither are experience and wisdom because we live in a dynamic world. Strategies have to change and for this we need understanding and flexibility. The older and younger generations need to communicate, synergize and draw the best from each other. A healthy conversation and dialogue is essential to bridge the gap.

The people belonging to different generations have been given different names for instance those born

Peer Reviewed Multi-Disciplinary  
Annual National Indexed Research Journal  
Published as per UGC (India) Guidelines

Impact Factor  
5.455  
[www.sjifactor.com](http://www.sjifactor.com)

ISSN 2349-9370  
Vol. 7 Issue 3  
Jan. 2020  
Special Issue

# Research Journal of India

[www.researchjournal.net.in](http://www.researchjournal.net.in)

[www.indiramahavidyalaya.com](http://www.indiramahavidyalaya.com)

[www.mmcdarwha.org](http://www.mmcdarwha.org)

Special Issue

One Day Interdisciplinary National Conference on  
Recent Trends and Issues in Humanities

Organized by Mungasaji Maharaj Mahavidyalaya, Darwha  
11 January 2020

Published By  
DBMRC

INDIRA MAHAVIDYALAYA

KALAMB, DISTT. YAVATMAL, MAHARASHTRA 445 401 (India)

In collaboration with

Principal

MUNGASAJI MAHARAJ MAHAVIDYALAYA

DARWHA, DISTT. YAVATMAL, MAHARASHTRA 445 202 (India)



## Index

	मान्यवरांचे संदेश, संपादकीय, अनुक्रमणिका		3-10
1	SOME RELIVANT SOCIAL ISSUES OF INDIA IN CURRENT SCINARIO	Dr. Nilima Dawane	11-13
2	MAJOR SOCIAL ISSUES IN INDIA	Dr. Dayanand U. Raut	14-15
3	Indian social issues and Remedies	Mr. Ravi K. Kyaste	16-19
4	WOMENS EMPOWERMENT- ISSUES AND GENDER	Asst.Prof. S.N.Thakare Asst.Prof. Nasir Kasam Sheikh	20-21
5	Crime against Women and Causes	Dr. Rahul Narayanrao Hiwrale	22-24
6	DOMESTIC VIOLENCE: A MAJOR GENDER ISSUE IN CURRENT SCINARIO	Dr. Samruddhi Tapare	25-28
7	DEPICTION OF WOMEN IN ELECTRONIC MEDIA: WOMEN ISSUES AND PERSPECTIVE	Ms. Prema Jagdish Verma	29-33
8	स्त्रियांचे प्रश्न आणि स्त्रीमुक्ती चळवळ—एक अध्ययन	प्रा. डॉ. जयमाला लाडे	34-39
9	विदर्भातील ग्रामीण विकासातील आव्हाने	सहा. प्रा. एन. आर. भिंगारे	40-43
10	मराठी साहित्याचे सामाजिक योगदान	डॉ. दामोदर चंद्रभान दुधे	44-45
11	दलित समाजाच्या समस्या आणि उपाय	प्रा. शाम रा. दुर्तोडे	46-48
12	लिंगभेद : एक सामाजिक आव्हान	प्रा. डॉ. संतोष खंडारे	49-54
13	स्त्री आव्हाने आणि लिंगभाव अभ्यास	प्रा. ईश्वर ल. राठोड	55-57
14	बालविकास आणि संशोधन	प्रा.डॉ. अर्चना नारायण घर्मे	58-59
15	शेतकरी महिलांच्या समस्यांचे विश्लेषणात्मक अध्ययन	कु. रूपाली विश्वनाथ खराडे	60-62
16	शेतकरी आत्महत्या संदर्भात विविध समित्यांच्या अहवालांचे समाजशास्त्रीय अध्ययन	प्रा. डॉ. सुनिल प्रल्हाद गायगोळ	63-68
17	कौटुंबिक हिंसाचार : कारणे व उपाय	प्रा. पुरुषोत्तम रा. बांडे	69-73
18	भारतातील सामाजिक समस्या : विश्लेषण व तात्त्विक उपाय	प्रा. डॉ. गजानन एस. फुटाणे	74-77
19	भारतीय परिवेशातील सद्यकालीन सामाजिक सहिष्णुता एक चिकित्सक अध्ययन	डॉ.प्रा. निलिमा सरप	78-81
20	महिलांच्या शैक्षणिक विकासात सावित्रीबाई फुलेचे योगदान	प्रा. डॉ. बळीराम परशराम अवचार	82-84
21	भारतातील प्रमुख सामाजिक समस्येचे बदलते स्वरूप व उपाय	कु. शितल श्रीकृष्ण दातार	85-87
22	स्त्री समस्या आणि लिंग अभ्यास	स्वप्नील रामभाऊ चिकटे	88-90
23	भारतीय इतिहासात महिलांचे योगदान	प्रा. संकेत सुरेशराव काळे	91-93
24	पश्चिम विदर्भातील शेतकरी आत्महत्येचे वास्तव व सद्यस्थिती — एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	प्रा.डॉ. सुजाता आर. नाईक (गवई)	94-99
25	Current trends in library and information studies: Looking for the User – Centered Approach	Asst. Lib. P. T. Adhao	100-102
26	Old & Recent Trends of Library use in Teaching and Learning Process	Rajesh Gedam	103-106
27	Usage of Electronic-Resources in Academic Libraries and Role of Information Literacy	Prof. Rahul G. Mahure	107-110

## DOMESTIC VIOLENCE: A MAJOR GENDER ISSUE IN CURRENT SCINARIO

Dr. Samruddhi Tapare

Assistant Professor

Dept. of Sociology

SK Porwal Arts, Commerce, Science College, Kamtee

### ABSTRACT

Most often under the term domestic violence, people denote physical or sexual coercion, though this is a reasonable definition, domestic violence is a significantly wider term that requires clarification. Domestic violence is a narrower term for domestic abuse a behaviour pattern which implies controlling or dominating one person who is inmate relationship. It may have physical, emotional, sexual and economic aspects, sometimes combining several of them simultaneously. Most of all, it refers to emotional domestic violence, because they are more difficult to determine than physical or sexual abuse. Domestic violence refers not only to women or children. Men suffer from it as well. Mostly emotionally though cases of physical violence are not rare as well. The main fact to comprehend about an abusive relationship is that partner who acts as an aggressor will not change, and will not stop their insulting behaviour. The best option for people who suffer from a domestic violence is to break relationships. Domestic violence remains a significant social problem in many countries all over the world. Some of it's

(Key Words- problems, society, suggestions, efforts, average, adjustment etc)

### INTRODUCTION

Domestic abuse forms are obvious (physical or sexual violence) others can be emotional or financial violence. Emotional abuse involves humiliating, threatening and manipulating while financial violence can express itself in a partner limiting the economic freedoms of the counterparts. In spite of the attention that has been paid to violence against women in recent years, the research endeavour is relatively young and much remains unknown. There really is no one field focused on violence against women per se. Many of the studies in this newly emerging field of research on violence against women are at an early stage of scientific rigor. The methodological weakness in the research on battering and rape has been discussed at length in other documents. Yet in spite of all the shortcomings, a lot has been learned about the extent of violence and about the effect on victims.

### Definitions

#### Domestic violence:

It is pattern of abusive behaviours that occurs between family members and /or inmate partners to gain power and control.

It can take the form of physical, sexual, psychological, or economic abuse. It occurs in every country, in families of all races, cultures, religions and income levels. It can happen to people of all ages, genders and sexual indentations.

### Causes

1. For sake of children
2. Loyalty to abuser
3. Economic dependence
4. Love
5. Society pressure

Domestic violence is among the most underreported crimes worldwide for both men and women. Due to social stigmas regarding male victimization men face an increased likelihood



**PUBLICATION CERTIFICATE**

This publication certificate has been issued to

*Dr. Samruddhi Tapre*

For publication of research paper titled

*THE BEST PRACTICES IN HIGHER EDUCATION WITH PROFESSIONAL ETHICS  
AND HUMAN VALUES*

Published in

*Our Heritage with ISSN No. 0474-9030*

*Vol:68 issue: 60 Month: February Year: 2020*

*Impact factor:6.6*

The journal is indexed, peer reviewed and listed in UGC Care

Editor

**Eduindex Journals**

[www.eduindex.org](http://www.eduindex.org)  
[editor@eduindex.org](mailto:editor@eduindex.org)

Note: This eCertificate is valid with published papers and the paper must be available online at the website under the network of EDUindex. For cross check you can contact at editor@eduindex.org



## OUR HERITAGE

ISSN: 0474-9030 Vol-68, Special Issue-60  
National Conference on "Academic Libraries in  
E-learning Environment: Role and Prospect"  
Organized by: Learning Resource Centre, Jeevan Vikas  
Mahavidyalaya, Devgram, Narkhed, Nagpur, Maharashtra  
Sponsored by: ICSSR and Held on 29-30 January 2020.



## THE BEST PRACTICES IN HIGHER EDUCATION WITH PROFESSIONAL ETHICS AND HUMAN VALUES

**Dr. Samruddhi Tapre**

Assistant Professor

Dept. of Sociology, S.K. Porwal College, Kamptee

### *Abstract*

*Higher Education is a backbone of every country. Government has done free compulsory education there is also provision of various scholarship and student aid fund for improvement the education status in Indian Society context.*

*Primary education is an important step of every child. Overall development should be takes place in this stage. The quality of higher education is depending on primary education. The status of primary education is depend on the quality maintain by country. The status of primary education is not well developing after 65 years of Independence of India therefore higher education is an important issue in front of government in currency scenario. The government has been started various schemes and plans but the actual implementation is really observable factor.*

*Key words- quality, improvement, strategy, efforts, development)*

### **Introduction**

Today is a global world. There is no alternative to science and technology for the overall development of country. That's why every country in the world has accepted the policy of globalization. Most of the countries in the world having various types of social problems and those problems only can be solve by suitable application of science and technology in current scenario. Unemployment is main problem nowadays in front of every country. The science and technology policies can be provide the solution on the higher education.

With the help of science and technology, human resources can create and effectively implemented for covering the all area of society. Technology and HRM have a broad range of influences upon each other. In the present context of increasing globalization, employing organizations and their environments have become increasingly complex. Excess and randomly use of these things also harmful to working culture in higher education. There is need to frame best practices for improvement in higher education.

**WOMEN IN INDIA AND ISRAEL :  
PAST, PRESENT AND FUTURE**

(Proceeding)



Editor in Chief  
**JYOTI NISWADE**

15. Political Empowerment and Participation of Women In Maharashtra	Ms. Payal Chamatkar	118
16. Women In Higher Education With Special Reference To Doctoral Theses Awarded In Social Work By R T M Nagpur University	Dr. Prince Ajaykumar T Agashe	120
17. Women Empowerment	Dr. Rahul N. Hiwrale	134
18. Economic Independence In Relation To Women Empowerment And Gender Equality : Issues And Challenges	Dr. Rajesh P. Waigaonkar	139
19. Domestic Violence in Indian Society Current Scenario	Dr. Samruddhi Tapre	148
20. Health Status of Women In India	Dr. Shilpa Puranik	155
21. Women, Health And Nutritional Status	Dr. Sumedha G. Wankhede	161
22. The Constitution And Empowerment of Depressed Women	Dr. Varsha D. Gaikwad	166
23. Women Empowerment : Issues and Challenges	Dr. Vidhya K. Bhaisare	170
24. Status of Women's Economic Empowerment and Gender Equality In India : Issue and Challenges	Dr. Vijay Tupe	176
25. Gender Inequality In India: An Overview	Dr. Vinod G. Gajghate	185
26. Women Empowerment: A Need of Society	Ms. Amrapali E. Bhiogade	192
27. Nutrition & Stress Among Indian & Israel Working Women	Ms. Madhavi V. Peddada	203
28. Aesthetical Performance of Female News Anchors	Ms. Manjari Kushwaha Mr. Amit Kumar Chaubey	214
29. Tribal Women In India: Issues And Challenges	Ms. Mayuri Ramteke	223
30. Tracing Fierce Feminism In Rabindranath Tagore's Stories	Ms. Meenakshi Kulkarni	227
31. Issues And Challenges of Women Belonging To Rural Society In India	Mr. Milind R. Ghate	235
32. Genesis of Increasing Crime Against Women : Eradication of Violence And Promoting Dignity of Women	Mr. Milind S. Danao	240
33. Women Health and Nutritional Status In India : An Analysis	Dipratna Raut	253

## DOMESTIC VIOLENCE IN INDIAN SOCIETY : CURRENT SCENARIO

▪ Dr. Samruddhi Tapre

### Introduction:

Most often under the term domestic violence, people denote physical or sexual coercion, though this is a reasonable definition, domestic violence is a significantly wider term that requires clarification. Domestic violence is a narrower term for domestic abuse a behaviour pattern which implies controlling or dominating one person who is inmate relationship. It may have physical, emotional, sexual and economic aspects, sometimes combining several of them simultaneously. Most of all, it refers to emotional domestic violence, because they are more difficult to determine than physical or sexual abuse. Domestic violence refers not only to women or children. Men suffer from it as well. Mostly emotionally though cases of physical violence are not rare as well. The main fact to comprehend about an abusive relationship is that partner who acts as an aggressor will not change, and will not stop their insulting behaviour. The best option for people who suffer from a domestic violence is to break relationships. Domestic violence remains a significant social problem in many countries all over the world. Some of it's

Forms are obvious (physical or sexual violence) others can be emotional or financial violence. Emotional abuse involves humiliating, threatening and manipulating while financial violence can express itself in a partner limiting the economic freedoms of the counterparts. In spite of the attention that has been paid to violence against women in recent years, the research endeavor is relatively young and much remains unknown. There really is no one field focused on violence against women per se. Many of the studies in this newly emerging field of research on violence against women are at an early stage of scientific rigor. The methodological weakness in the research on battering and rape has been discussed at length in other documents. Yet in spite of all the shortcomings, a lot has been learned about the extent of violence and about the effect on victims.

(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

# *B.Aadhar*

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

**March - 2020**

SPECIAL ISSUE : CCXXVI (226)

**Domestic Violence: Impact on Indian Society**



Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande  
Director  
Aadhar Social  
Research & Development  
Training Institute Amravati

Editor:

Dr Nitin A. Mathankar  
Principal  
Late Vasantao Kolhatkar Arts  
College, Rohana

Guest Editor:

Prof. Deoman Umbarkar  
Late Vasantao Kolhatkar Arts  
College, Rohana

**The Journal is indexed in:**

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)





141	Need of information literacy in academic libraries.	Mr. Surendra D. Awathare	511
142	Economic Implications of Domestic Violence	Dr. K.C. Mandlekar	514
143	Today's Culture and Domestic Violence against Women	Dr. Archana k. Deshmukh	518
144	Research Paper- Geography Resources Development and Power	Dr. Kailas V. Nikhade	523
145	Domestic Violence against Women in Modern Society	Dr. Ravikant N. Mahindkar	525
146	History Of Racism Against Blacks	Shyam M. Gedam	529
147	Women & Domestic Violence Law in India	Nishcha Subhash Kukade	533
148	Inherent dominance is the root cause of violence	Dr. Sunirmal S. Kabiraj	537
149	" Women And Domestic Violence In India"	Sunil P. Ghugal	539
150	Human Right and Domestic Violence Author	Dr. V.D. Acharya	543
151	Theme of Violence in Vijay Tendulkar's Plays	Shri Rupesh Prakash Rede	545
152	Gender Inequality for Imbalance the Sex Ratio with Context to Indian Society in Current Scenario	Dr. Samruddhi Tapre	548
153	Stress Management In Sport	Dr. Pravin Gopalrao Patil	553
154	Domestic Violence against Women	Prof. Chanrandas Solanke	559
155	Domestic Violence : Impact On Indian Society	Dr. Deoman S. Umbarkar	562
156	Connection of Illiteracy and Unemployment with Context to India in Current Scenario	Dr. Govindprasad Dubey	568
157	Pollution And It's Impact On Human Life	Dr. Nilima Dawane	574
158	Multiculturalism and Family Conflict in Desirable Daughters	Dr. Sanjay Tappe,	581
159	Gender Inequality and Domestic Violence in India	Dr. Anuradha Khade	586
160	Sports related domestic violence	Prof. Sharad Kumar S. Mishra	590



## Gender Inequality for Imbalance the Sex Ratio with Context to Indian Society in Current Scenario

Dr. Samruddhi Tapre

Assistant Professor Dept. of Sociology S.K. Porwal College Kamtee

### Introduction-

Discrimination is the intentionally or distinguishing treatment of an individual based on their actual or perceived membership in a certain group or category, such as their race, gender, sex or cast. Gender discrimination and sexism refers to beliefs and thoughts in relation to the gender of a person, such beliefs and attitudes are of a social nature and do not, normally, carry any legal consequences. Sex discrimination, on the other hand, may have legal consequences. A sex difference is a distinction of biological and physiological characteristics associated with either males or females of a species.

Gender inequality refers to unequal treatment or perceptions of individuals based on their gender. There are natural differences between the sexes based on biological and anatomic factors, most notably differing reproductive roles. While doing the study of evolution of man, it is noticed that from starting to till in each and every step of life there is gender discrimination. Social, economical, cultural religious and political discrimination are the various examples of gender bias and discrimination.

Gender inequality can further be understood through the mechanisms of sexism and discrimination which takes place in this manner as men and women are subject to prejudicial treatment on the basis of gender. Sexism occurs when men and women are framed within two dimensions of social cognition. Objective rules applied rigidly to women but leniently to men.

In society we can observe that girls should be in home for every time. This is a one type of well-known example of gender discrimination. Subcritical atmosphere the existence of men easily is acceptable but women are always on secondary place.

The tendency of sex bias start from early stage means childhood. This situation effects and creates very serious problems in society. Unequal sex ratio is a symbol of this product. Women are important for reproduction. Sex is very important between a male and a female so as to continue the species on earth. The cultural construct of Indian society which reinforces gender bias against women, has led to the continuation of India's strong preference for male children.

A decline in the sex ratio was observed with India's 2011 census reporting that it stands at 914 females against 1,000 males, a drop from 927 in 2001:- the lowest since India's independence.

### Methodology -

For the preparation of this article society is a main platform where all the issues are gathered. This is a very serious problem facing in Indian society. Exploitation of girls and women is common in society. Domestic violence, dowry system, parda system, cast related issues ignorance of the statues of women etc are the various crucial problems have created by gender bias and discrimination.

The various news and discussion by media, Intellectual orientation, awareness by social workers and NGO. s etc are the main primary resources of data collection. In secondary data collection various sites, books and internet links have been referred by researchers. With the help of statics and numerical published in gazettes, newspapers, TV channels are main sources of information and availability of data, data tabulation, classification, interpretation and conclusion have been drawn by researcher.

### Education and gender-Bias

Literacy for females stands at 65.46%, compared to 82.14% for males. Behind 1000 men there are 933 women. Means in comparison both factors are unequal. Job profile is shown the effect of gender bias. Women do not own property under their own names and usually do not have any



**C.P. and Berar E.S. College, Nagpur**

**DEPARTMENT OF SOCIOLOGY**

*Organises*

**ICSSR SPONSORED**

**One Day Interdisciplinary National Conference**

**Along With**

**Research for Resurgence Foundation And Vidarbha Development Board**

# Certificate

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms. *D.K. Samriddhi Tapare* has attended One Day of *S.K. Patwal College, Kamptee* Interdisciplinary National Conference on Relevance of Post Independence Social Movements in India organized by the Department of Sociology, C.P. and Berar E.S. College, Nagpur. Along with Research for Resurgence Foundation And Vidarbha Development Board on 4<sup>th</sup> February, 2020

He/ She has presented research paper entitled *Industrialization, Globalization and* *Environmental Movement*

**Dr. Arvind Joshi**  
Organizing Secretary  
Department of Sociology  
C.P. and Berar E.S. College, Nagpur

**Dr. Milind Barbate**  
Principal  
C.P. and Berar E.S. College,  
Nagpur

Fwd: Conference papers published in UGC CARE listed journal title Studies in Indian Place Names having ISSN: 2394-3114 as Special Issue

From: samruddhi tapare <samruddhitapare@gmail.com> on Sat, 23 May 2020 17:30:27 Add to address book To: You | See Details

----- Forwarded message -----

From: Aravind Joshi <aravindjoshi75@gmail.com>  
Date: Monday, March 9, 2020  
Subject: Fwd: Conference papers published in UGC CARE listed journal title Studies in Indian Place Names having ISSN: 2394-3114 as Special Issue  
To: ajay mohabansi <asmohabansi@rediffmail.com>, "Sadhana Lanjewar, Sociology" <svlanjewar@gmail.com>, samruddhi tapare <samruddhitapare@gmail.com>, Gopichand Nimbarte <gnimbarte@gmail.com>

SUB- RESEARCH PAPER PUBLICATION

----- Forwarded message -----

From: IA RA <iaraconferences@gmail.com>  
Date: Mon, 9 Mar 2020 at 09:09  
Subject: Conference papers published in UGC CARE listed journal title Studies in Indian Place Names having ISSN: 2394-3114 as Special Issue  
To: Aravind Joshi <aravindjoshi75@gmail.com>

Dear Dr. Aravind,

The Research papers of conference are published in UGC CARE listed journal title **Studies in Indian Place Names** having **ISSN: 2394-3114** and **Impact Factor 6.3** in Vol-40-Issue-37-March-2020

Author are request to download the paper in pdf format and save the individual paper for future reference / requirement.

#### Steps to download the Research paper:

- Visit the journal website <https://www.tpnsindia.org>
- Click on ARCHIVES page and visit VOLUME 40, ISSUE 37, 2020 <https://archives.tpnsindia.org/index.php/sipn/issue/view/122>
- Special Issue of C. P. and Berar E. S. College will appear with index of Individual papers.
- Download the paper.

Regards  
Dr. Akhter Alam

With Warm Regards

**Dr. Aravind. D. Joshi**  
Professor & H O D  
C P & Berar College, Nagpur  
Mo No 8668972881/8275282541

*Edited Book*  
*ISBN-978-81-946103-7-3*

*Vidarbha Marathi Samajshastra Parishad*  
*Organised*  
*One Day Interdisciplinary National e- Conference*  
*On*  
*6<sup>th</sup> September, 2020*  
*On*  
*The Contribution of Sociologists for Community Development*  
*and Nation Building*

**Dr.B.M.Karade**  
**Organizing Secretary and Chairman**  
Vidarbha Marathi Samajshastra Parishad

**Dr.Ravindra Vikhar**  
**Secretary**  
Vidarbha Marathi Samajshastra Parishad

Sequence

<i>Sr.No</i>	<i>Name of Research Paper</i>	<i>Name of Author</i>	<i>Page No.</i>
1	National Integration and Nation Building through Ashtanga Yoga	Dr. R. PRASANNA LAXMI	1
2	MIGRANT LABOUR AND THIRE PROBLEMS	Dr.Samrudhhi Tapre	9
3	GLOBALIZATION AND IT'S ITS EFFECTS WITH CONTEXT TO INDIAN SOCIETY	Dr.Snigdha Kamble	13
4	POVERTY: A MAIN SOCIAL PROBLEM IN INDIA	Dr.Priti Kale	17
5	ग्रामीण विकासात शासन आणि प्रशासनाची भूमिका: समाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ.कालिदास मारुती भागै	21
6	डॉ. एम. एन. श्रीनिवास यांचे भारतीय समाजशास्त्र विकास व योगदान	स्मिता र. देवर	27
7	कष्टकऱ्यांचे मुक्तीदाते समाजतज्ज्ञ डॉ. आंबेडकर	डॉ. राजेद्र ज. कांबळे	30
8	वयस्कांच्या समस्या आणि उपाय	प्रा. लिना वि. गादेवार	34
9	विस्थापनातून उदभवित समस्या आणि विकास	प्रा. शोभा. पी. ताजने	39
10	पर्यावरण प्रदूषण आणि मानवी हस्तक्षेपाचा अतिरेक	प्रा. करुणा प्र.इंगळे	44
11	लोकसंख्या वाढ व पर्यावरणाचा न्हास	कु. मनिषा नि. अवगान	49
12	ग्रामीण विकासाकरीता शासन व प्रशासनाची भूमिका	सचिन पंढरी खेडकर	54
13	पर्यावरण आणि सामाजिक परिस्थिती	प्रा. अनिता आसाराम सार्वे	63
14	नैसर्गिकी स्वयंसेवी संस्थांची आदिवासी कल्याण कार्यक्रमातील भूमिका	प्रा. डॉ. रविंद्र विठोबा विखार	68

## MIGRANT LABOUR AND THIRE PROBLEMS

Dr.Samrudhhi Tapre

### Introduction

Migrant labour are the people who travels from one place to another in search of work. Many of them travel with their families or individually so that they can provie their family a good lifestyle. These workers migrate within their home country or outside to get work. Workers who migrate outside their country are also called as foreign workers.

In people's view migration is very simple and it will always be successful but this path is full of challenges. Migration has both positive and negative effects Government is working very hard by imploying various schemes for migrant labours and is always there to help them in every situations.

### Casuses:-

Following are the causes for increasing number of migrant workers:-

- 1) The main reason behind migration of people is to persue better life.
- 2) In search of good Employment opportunities majority of workers migrate to urban cities or in foreign countries.
- 3) As education plays very important role in everybody's life. Workers migrate with their family to provide their children with good education facility.
- 4) In rural areas there is lack of hospitalization facility. So to get bitter facility people migrates.
- 5) People living in deserts, near costal areas faces lot of problems like drought, flood etc. so to get rid of these problems people with their family shifts to safer places.
- 6) for construction of dam and its reservoir people of that whole area have to shift to different places and searches for new work.
- 7) Many of the times in MNC's working are promoted and transferred to different locations as per companys need.
- 8) Due to several climatic changes there is lack of production of grains and other material in farms. Therefore farmers have to migrate to other places in search of work.
- 9) Many of the workers migrate with their families and cattles to sell their handicrafts to people across different region.
- 10) Due to governmental activities such as coal mining, and mining of other minerals, road construction, etc. people have to migrate as villages are destroyed.

# STATUS OF INDIAN WOMEN

*Editors*

**Dr. Vishwanath M. Suryawanshi**  
**Dr. Tukaram R. Fisfise**



**SNEHAL PUBLICATIONS**

Parbhani-431401



**ISBN: 978-93-91998-14-1**

---

**Title:** Status of Indian Women

**Editors:** Dr. Vishwanath M. Suryawanshi

*Dr. Tukaram R. Fisfise*

**First Published:** March 2022

© Editors

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the written permission of the copyright owner.

**Published by**

Snehal Publications,

Shivram Nagar, Parbhani- 431401.

Mob. + 91 9730721393, +91 9420079975

**Typesetting:** Seema Zade

**Cover Designing:** Dr. Kalyan Gangarde

**Price:** Rs. 225/-

**Printed at**

Snehal Printers and Book Binders,

Shivram Nagar, Parbhani- 431401

Mob. + 91 9730721393

Facts, views and opinions published by the author in the book express solely the opinions of the author. Authors are responsible for their content, citation of sources and the accuracy of their references. The publisher cannot be held responsible for any lacks or possible violations of third parties' rights.

---

14. Sexual Abuse: Problems Among Girl Child Dr. Maheshkumar Pardeshi & Dr. D.S. Dharwadkar	87
15. The Role of SHGs In Women Entrepreneurship Development for Women Empowerment: With Special Reference to Jalna District M.S. Parturkar	91
16. Indian Patriarchy Rohini Patel	97
17. <u>Female Foeticide and Infanticide</u> Dr. Samruddhi Tapare	104
18. Changing Status of Woman in Indian Family Sunita M. Bais	112
19. Significance Of Women Empowerment in India Dr. Ganesh K. Chalindrawar	117
20. Challenges Of Women Empowerment Dr. Varsha Zanvar Dodiya	122

**FEMALE FOETICIDE AND INFANTICID****Dr.Samruddhi Tapare**Assistant Professor  
Dept.of Sociology  
Porwal College Kamptee,Nagpur**Introduction**

Female foeticide is the act of aborting a foetus because it is female. The frequency of female foeticide is indirectly estimated from the high birth sex ratio. The natural ratio is assumed to be between 103 to 107 and any number it is considered as suggestive of female foeticide.

Female foeticide is the elimination of the girl child in the womb itself done deliberately by mother after the disclosure of child's gender through medical means. The child sex ratio is within the normal natural range in all eastern and southern states of India but significantly higher in certain western and north western states such as Punjab, Haryana and Jammu & Kashmir. It is not only an issue in India but also has been an issue from the last 20 years in some surrounding and undeveloped countries such as China, Pakistan, Vietnam, Azerbaijan, Georgia etc.,

**Causes:**

There are many causes for existence of this social evil.

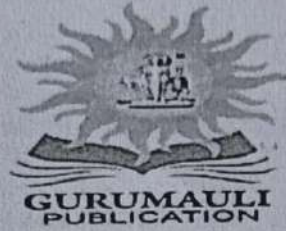
- This is due to the disclosure of sex of the foetus. This is done from the various prenatal diagnostic techniques such as ultrasonography, fetoscopy and also by amniocentesis. It is determined by testing the samples of amniotic fluid, embryo, blood or any tissue or fluid of the pregnant woman after conception.
- This is usually for the greedy for obsession of son which done under familial pressure from the husband or the in laws or even the woman parents.

NATIONAL LEVEL & PEER REVIEWED PUBLICATION

CHAPTER IN BOOK

# गुरुमाउली पब्लिकेशन्स

MARCH -2022 ISSUE NO- 01



**THEME: COVID-19 IMPACT ON INDIAN SOCIETY**

# BOOK LAUNCH



ISBN.NO.978-93-82962-14-4

EDITOR

DR.DEOMAN SHRIKRUSHNA UMBARKAR

DEPARTMENT OF SOCIOLOGY

LATE. V. KART'S COLLEGE, ROHANA

TAH. ARVI DIST. WARDHA (M.S.)

Email-dcomanumbrkar2014@gmail.com

EDITOR

PROF.RAJENDRA MUDDAMWAR

DEPARTMENT OF POL.SCIENCE

SHRI.SHIWAJI MAHAVIDYALAYA,

RAJURA

EDITOR

DR.NAGNATH MANURE

DEPARTMENT OF ECONOMICS

SHRI.SHIWAJI MAHAVIDYALAYA,

RAJURA



## INDEX

NO.	Title of the Paper	Authors Name	Page No.
1	Impact of Covid-19 on Finance and Banking Transactions	Dr. Rupa Z Gupta	1 to 4
2	Impact of Covid-19	M. P. Chikhale	5 to 9
3	Covid 19 and Online Learning	Dr. Prashant S. Pagade	10 to 12
4	GIS Concepts and Terrain Analysis	Dr. Kailas V. Nikhade	13 to 14
5	ALCOHOLISM AND DRUG ABUSE: STIGMA ON INDIAN SOCIETY	Dr. Samurddhi Tapare	15 to 18
6	New Trends in Nutrition	Dr. Mrunal R. Waliokar	19 to 22
7	Women Empowerment through Self Help Group in Bhivandi Taluka, Thane District.	Dr. Poonam M. Khadke	23 to 29
8	कोविड-१९ आणि मानवी जीवनावर झालेले परिणाम	डॉ. तुषार मधुकर माळी	30 to 34
9	कोविड-१९ चे शिक्षणावरील परिणाम	प्रा. डॉ. लोमेश्वर र. घांगरे	35 to 36
10	भारतीय लोकशाही पुढील नवीन आव्हाने एक महत्वपूर्ण अवलोकन	प्रा. मनोज के. सरोदे	37 to 43
11	कोविड १९ चा शेतकऱ्यावर झालेला परिणाम	सा.प्रा.अनिल रविशंकर राऊत	44 to 46
12	कोविड - १९ चा शिक्षणावरील परिणाम.	डॉ. आश्लेषा मुंगी	47 to 50
13	कोविड-१९ ऑनलाईन शिक्षणपध्दतीचा किशोरवयीन विद्यार्थ्यांवर होणारा परिणाम: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	प्रा. अमिता महातले (विरूटकर)	51 to 55
14	शेतकऱ्याचा गावकुसातील मित्र - माना जमात : सद्यस्थिती आणि आव्हाने	Prof. Pawan Barhate	56 to 60
15	ग्रामीण युवाओं पर उत्तर आधुनिकता का प्रभाव	प्रा. तुलशिदास शामराव कोसे	61 to 65
16	मीडिया पर कोविड . १९ का प्रभाव	Dr. Alpana Vaidya	66 to 70
17	" कोरेना महामारीचे भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम"	प्रा. अभिजीत मनोहर शिंगाडे	71 to 78



## ALCOHOLISM AND DRUG ABUSE: STIGMA ON INDIAN SOCIETY

Dr.Samurddhi Tapare  
Assistant Professor  
Dept.Of Sociology  
S.K.Porwal College Kamptee

### Abstract

Alcoholism refers to heavy and unmediated drinking. People suffering from alcoholism drink excessively without any form of control or discipline.

Alcoholism can also be defined as an addiction to alcohol. It is a habit that is dangerous to the health of an individual and often leads to negative social impacts as well as health complications. Depression is a mental illness that is caused by various factors such as the loss of a loved one, the lack of self-esteem, unhappiness, despair, and dejection. A person who is depressed finds life an unbearable burden and to overcome all the unpleasant thoughts, finds comfort in alcohol. Unfortunately, alcohol is a depressant and as much as the person taking it may achieve that temporary high, once the effect wears off, the depression sets in and this time much worse than before. It, therefore, becomes a habit as the affected person continuously drinks to stay high and keep away the bad memories and thoughts. Mental Stress can be caused by anxiety, tension, worry, excessive workload or trauma. When your desk is full of pending work, coupled with the need to balance family and work life, mental stress may set in. Anxiety, worry, or tension caused by unsolved issues may also lead to mental stress. To cope with the pressure, one might find alcohol an attractive solution. People who find it difficult to strike a balance between their professional and personal lives may become alcoholics as the pressure becomes too much bear. The same may happen in a situation of marital strife that leads to mental stress. The affected spouse or spouses may turn to alcoholism to cope with the ensuing stress.

**(Key Words-** strategy, efforts, suggestions, eradication, problems etc)

### Introduction

Some people start off as social drinkers then eventually become alcoholics. The habit of taking a few drinks after work or during the weekend may turn into an alcohol addiction especially for a person who does not have the ability to regulate his or her drinking. Taking alcohol for pleasure can create a social life pattern that results in alcoholism.

There are people who work as wine-tasters. They taste wine and write reviews based on texture, smell, and the actual taste of the product. It is a job that may turn into an alcohol addiction if left unchecked. Individuals in such areas of work may develop compulsive habits and end up as alcoholics.

Young people are the most affected with peer influence. The need to fit in can often lead to the development of bad social habits such as alcoholism. The constant parties and weekend rendezvous are basically characterized with a lot of boozing and other illicit substances. Bad peer influence is one of the leading causes of alcohol and substance abuse among young people. The group mentality is an ideal foundation for social vices and bad habits that may affect an individual for much of his or her adult life.

*Edited Book*  
*ISBN-978-81-946103-9-7*

*Advance Research Methodology and  
Innovations*

*Editor*  
*Mr.Prashant L.Dhenge*

Sequence

<i>Sr.No</i>	<i>Name of Research Paper</i>	<i>Name of Author</i>	<i>Page No.</i>
1	Parking options— for tier II cities like Nagpur	Dr.Ashok S.Karndikar	1
2	Status and challenges of students availing secondary education at Nagpur Municipal Corporation schools with special reference to quality education and policy implications: A study of Social Work intervention	Ms Janki Gode	8
3	A Study on Financial Inclusion of Rural Women Workers in Nagpur District	Varsha Atkari	16
4	Requirement of Research in current scenario	Dr.Samruddhi Tapre	23
5	Effects of Corona Virus on Global Employment	Dr. D.T Shende	27
6	ग्रामिण भागातील महिलांच्या विकासात स्वयंसहाय्यता गटाचे योगदान : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	प्रा. शोभा पांडुरंग ताजने	32
7	नागपूर जिल्ह्यातील अल्पभुधारक शेतकऱ्यांचा आर्थिक व सामाजिक समस्यांचे अध्ययन	प्रा..लीना विलास गादेवार .	45
7	महाराष्ट्र राज्यातील महिला सरपंच यांच्या शिक्षणाचा ग्रामविकासावर होणारा परिणाम — एक अभ्यास	योगिता दिगांबर गायकवाड	62
8	साहित्यिक समीक्षा का महत्त्व	Sudhakar k. Mate	75



## **Requirement of Research in Current Scenario**

**Dr. Samruddhi Tapre**  
Assistant Professor  
Department Sociology  
S.K. Porwal College, Kamtee

### **Introduction**

Research is a part of human life which directly and indirectly involved in the society. Research, development, innovation and discoveries are the various methods to find out the new things in daily life. In the world, some countries develop fast because of enhancing the speed of research. The development of particular country depending on the promoting program held up by that respective nation.

In this article main focus has been given on main objectives of research, research problems with suitable illustration and discussion. While pursuing the research, various steps as well as methods generally use by researchers have been discussed in detail. Ultimately how the research play an important role in educational curriculum research activities also covered in this article.

Research is a backbone of every educational field. Quality research work always appreciates in research and development activities. For the development of nation and society there is a need of positive and suitable research in every field.

Basically research is useful to promote and creation of researchers, development the research approaches, platform, expose to own hidden virtues, extension the scope of research with specific collaboration. There is a need of time for application the research work, data collection, role of research agencies, publication and new trend in research.

Scientific research shows on the application of the scientific method which gives the place to authentic research. This research provides scientific information and theories for the explanation of the nature and the properties of the world.

### **Parameters of Resercah**

1. To identify the particular topic in a systematic way for detail study of related issues-As per the specialization respective topics can studies applying the research methodology on particular topic.
2. To known the root causes, characteristics, effects, merits and demerits in research area.
3. To do the study of particular problem with experimental basis, involvement of statistics with specific results.
4. To test a hypothesis with respect to variables which is called as testing of hypothesis. Testing of hypothesis is essential to put on the objectivity in research.
5. Explanation and elaboration of the purpose of research for the correct result in research.

Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

# *B.Aadhar*

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

ISSUE No- (CCCI)301

July -2021

Impact of Race, Caste, Class and Religion on  
Indian and International Society



Prof. Virag S. Gawande  
Chief Editor  
Director  
Aadhar Social  
Research & Development  
Training Institute Amravati

Dr Nitin A. Mathankar  
Executive-Editor  
Principal,  
Late Vasanttrao Kolhatkar  
Arts College, Rohana

Dr. Deoman S. Umbarkar  
Editor  
Organizing Secretary  
Department of Sociology  
Late Vasanttrao Kolhatkar  
Arts College, Rohana

**This Journal is indexed in :**

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

## **Aadhar Publication**

For Details Visit To: [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)



55	Impact of Caste on Sustainable Development Prof. Satishkumar G. Dhawad	237
56	Female Foeticide and Infanticide: A Main Social Problem Of India In Current Scenario Dr. Samrudhhi M. Tapare	242
57	Impact of COVID on Indian Economy Dr. Rupa Z. Gupta	245
58	An Overview on New Farm Bill Act Dr. Rupa Z. Gupta	248
59	Educative Role of College Library and Librarian in New Era. Dr. Rajkumar Pandharinath Ghule	251
60	Impact Of Caste, Class & Religion On India Today Prof. Rahul G. Mahure	255
61	Application of Electronic Security Systems in Libraries Dr. Prashant S. Pagade	262
62	A Conceptual framework of e- Engineering the Library Services Sau. Meena A. Vaidya	265
63	Impact of caste and Religion on Social Relationship Dr. Manojkumar Varma	267
64	Literature On Crises Caused By Nature Dr. Mamata Fuke	269
65	Preparation and Evaluation of PVAc Membrane for Gas Separation M. B. Kumbhare	274
66	Contemporary Understanding of Schizophrenia Dr. Kavita Kanholkar	278
67	Changing Attitudes Of Female Students In Gulbarga City Smt. Kalpana Veerabhadrapa/ Dr. V.B. Korishetti	286
68	PNDT Act Challenges in Society Jaya Wajire	292
69	Literature on Media and Information Literacy Dr. Vyas Jagdish	295
70	Fresh Water Fishes Of Tapi Region Of Jalgon District Maharashtra Dr. Hanumant Gopalrao Sadafule	301



**Female Foeticide and Infanticide: A Main Social Problem Of India In  
Current Scenario**

**Dr. Samrudhhi M. Tapare**

Assistant Professor Dept. of Sociology S.K. Porwal College, Kamptee.

Email: samrudhitapare@gmail.com, Mobile No. 9405658524

**Introduction**

The problems which are related to society are known as social problems. There are many social problems in our country. Some of them are listed below:

- 1) Poverty
- 2) Over population
- 3) Sanitation
- 4) Corruption
- 5) Religious & Caste related violence etc.

India is a socialistic, sovereign and republic country. It has many cultures. It shows unity in diversity. Because of above problems our country is declining its development. Now-a-days many people are committing suicide. India is vastly depends on the agricultural sector. Because of several reasons farmers who are backbone to our country are committing suicide.

**Some of the reasons are**

- 1) Habits like drinking, smoking
- 2) Failure of crops
- 3) Family problems
- 4) Political affiliation
- 5) Property disputes
- 6) Debt burden
- 7) Failure of bore well etc...

Students who are backbone for development our country are committing suicides. According to Indian scenario over 16,000 students committed suicide in last three years. Every 90 minutes a teenager is trying to commit suicide.

**Some of the reasons for their suicides are**

- 1) High pressure on them by parents
- 2) Failure of Professional pursuits
- 3) Love and attention problems
- 4) Failure in their professional courses etc..

**Female Discrimination**

**Causes**

There are many causes for existence of this social evil.

- 1) This is due to the disclosure of sex of the foetus. This is done from the various prenatal diagnostic techniques such as ultrasonography, foetoscopy and also by amniocentesis. It is determined by testing the samples of amniotic fluid, embryo, blood or any tissue or fluid of the pregnant woman after conception.
- 2) This is usually for the greedy for obsession of son which done under familial pressure from the husband or the in-laws or even the woman parents.
- 3) Unplanned pregnancy is generally the reason behind abortion, which leads for killing of foetus which is generally a female one.
- 4) Fear of dowry by many poor and middle class families.
- 5) Girls are considered as financial obligation of many parents.
- 6) Innovative techniques which are to detect genetic abnormalities are highly misused in India. Estimates tell us that 70000 unborn girl children are aborted each year.
- 7) Generally boys are preferred over girls because they provided manual labour and success the family lineage. A son is often preferred as an asset since he can earn and support the family whereas a

Impact Factor – 6.261

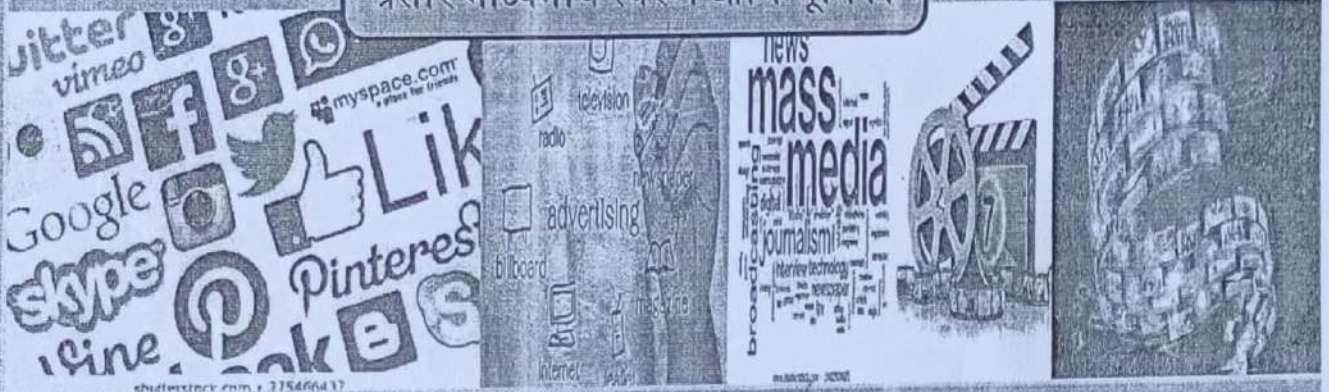
ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S  
**RESEARCH JOURNEY**

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL  
December-2019 Special Issue – 211

**Role & Nature of Media**  
प्रसार माध्यमांचे स्वरूप आणि भूमिका



Guest Editor:

Dr. R. G. Tale,  
Principal,  
Bar. Sheshrao Wankhede College of  
Arts & Commerce, Khaperkheda  
Dist. Nagpur, Th. Saoner, Maharashtra

Executive Editor of the issue:

Dr. Jyoti Selukar  
Dr. Anjali Pande

Chief Editor:

Dr. Dhanraj Dhnagar



This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

SWATIDHAN PUBLICATIONS



35	सामाजमाध्यमांच्या विळख्यातील युवावर्ग	डॉ. प्रीती उमाठे	149
36	भारतामध्ये ई-कॉमर्स प्रणाली प्रवेगीत करण्यात प्रसारमाध्यमांची भूमिका	डॉ. दामोदर भेंडे	153
37	प्रसारमाध्यमांचे व्यापारीकरण	डॉ. राजेंद्र कांबळे	161
38	प्रसार - माध्यमांचे व्यावसायीकरण	डॉ. विद्या चन्ने	163
39	प्रसारमाध्यमे आणि साहित्य यांची भूमिका	प्रा. संजय सिंगनजुडे	167
40	प्रसारमाध्यमांचा युवा वर्गावर पडणारा प्रभाव	डॉ. उल्हास राठोड	173
41	प्रसारमाध्यमे आणि पत्रकारितेची सामाजिक भूमिका	प्रा. संगीता उमाळे	176
42	प्रसारमाध्यमांतील अर्थकारण	डॉ. एस. एस. हजारे	182
43	प्रसारमाध्यमे आणि स्त्रिया	डॉ. साधना जांजेवार	186
44	प्रसारमाध्यमे : नाटक - चित्रपट - खेळ	डॉ. विजया राऊत	189
45	स्मार्ट फोनचा महाविद्यालयीन मुलींच्या सामाजिक जीवनावर पडणारा परिणाम	डॉ. सुरेश सोमकुंवर	193
46	प्रसारमाध्यमे आणि बदलते ग्रामीण जीवन	प्रा. प्रमोद शेन्डे	200
47	आधुनिक प्रसार माध्यमांचे प्रकार	डॉ. सोपानदेव पिसे	206
48	प्रसारमाध्यमांचे बदलते स्वरूप	प्रा. मोनाली बहादुरे	211
49	प्रसारमाध्यमे आणि समाज	डॉ. स्नेहप्रभा गावंडे	216
50	विवाहसंस्थेवर प्रसार माध्यमांचा प्रभाव	प्रा. राखी तुरस्कर	218
51	प्रसारमाध्यमे आणि समाज	प्रा. संतोष यादव	221
52	प्रसारमाध्यमांच्या दर्पणातील समाज	डॉ. कमलकिशोर इंगोले	224
53	प्रसारमाध्यमे आणि समाज	प्रा. श्रीरंग लभाने	228
54	प्रसारमाध्यमे आणि युवा पिढी	मनीषा सोनटक्के	233
55	प्रसारमाध्यमांचे बदलते स्वरूप	डॉ. मंगला कांबळे- डाहाट	236
56	प्रसारमाध्यमे आणि स्त्रियांची बदलती भूमिका	डॉ. भारती मस्के	240
57	प्रसारमाध्यमे आणि समाज	प्रा. बाळकृष्ण रामटेके	243
58	प्रसारमाध्यमांचे व्यापारीकरण	डॉ. अमिता रघटाटे	247
59	प्रसारमाध्यमे आणि समाज	डॉ. समृद्धी टापरे	251
60	प्रसारमाध्यमांचा आढावा व बदलती जीवनशैली	डॉ. प्रवीण काळे	255
61	प्रसारमाध्यमे आणि समाज	डॉ. अशोक शहाणे	258
62	प्रसारमाध्यमांची आजची स्थिती व व्यावसायिक समाजकार्य	डॉ. चंदु पाटील	261
63	प्रसारमाध्यमांचे व्यापारीकरण	प्रा. पंढरी मोरे, डॉ. डी. डी. सांबारे	265
64	प्रसारमाध्यमांचे बदलते स्वरूप	कविता राजभोग	269
65	प्रसारमाध्यमे आणि समाज	डॉ. अनुराधा खाडे	275
66	मुद्रित प्रसारमाध्यमांमध्ये अग्रलेखाचे महत्त्व	प्रा. अमृता डोरलीकर	277
67	प्रसारमाध्यमांची भूमिका व आजचे सामाजिक वास्तव	डॉ. मनीषा नागपुरे	284
68	प्रसारमाध्यमे आणि स्त्रियांची बदलती भूमिका	डॉ. स्वाती वाकोडे	289
69	प्रसारमाध्यमांचे बदलते स्वरूप	प्रा. रीता वाळके-इंभाळे	292
70	प्रसारमाध्यमे आणि साहित्य	डॉ. साधना जिचकार	297
71	प्रसारमाध्यमे आणि सामाजिक परिवर्तन	डॉ. स्वर्णलता वारके	301
72	प्रसारमाध्यमांचे बदलते स्वरूप	प्रा. लीना गादेवार	305
73	समाजमाध्यमे आणि तरुण पिढीतील परिवर्तनाचे अध्ययन	कु. मयुरी ठाकरे	311
74	प्रसार माध्यमे आणि समाज	डॉ. राखी जाधव	315



## प्रसारमाध्यमे आणि समाज

डॉ. समृद्धी मदन टापरे  
समाजशास्त्र विभाग  
सेठ केसरीमल पोरवाल कला,  
वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,  
कामठी.  
मो. नं. ९४०५६५८५२४

प्रस्तावना:-

प्रा. डेनिस मॉक्विल यांच्यामते "The media are the single largest focus of leisure time activity and means of entertainment". प्रसार माध्यमे ही फावल्या वेळातील लोकरंजनाची महत्वपूर्ण साधने म्हणून काम करतात. फावल्या वेळात मनोरंजन कसे करावे याबाबत सहाय्य करण्याचे संघटनांचे आणि अन्य रंजनविषयक उपक्रमात सुसूत्रता आणण्याचे कार्य करतात. यासर्व कारणांमुळे प्रसार माध्यम ही प्रमुख व विकासमान अशी उद्योग संज्ञा म्हणून उदयास आली आहे.

प्रसारमाध्यमे ही त्या त्या समाजाच्या एका ऐतिहासिक प्रक्रियेतून विकसित होत जातात आणि असे होतानाच त्या समाजाच्या जडण घडणीतही त्याचा वाटा असतो हे ही त्यातून स्पष्ट होते. समाजात प्रसारमाध्यमांना इतके महत्त्वाचे आणि केंद्रवर्ती स्थान लाभल्यामुळे प्रसार माध्यमांना सामाजिक व्यवस्थेचा दर्जा दिला जातो. ज्यामध्ये कुटुंब, शिक्षण, शासन व्यवस्था, धर्म अशा अनेक व्यवस्था समाजावर, लोकांच्या जगण्यावर, विचार आणि कृतीवर आपला ठसा उमटत जातात. त्याचप्रमाणे माध्यमांचाही ठसा आपल्या जगण्यावर उमटत जातो. आधुनिक जगात प्रसारमाध्यमांचे महत्त्व दिवसेंदिवस वाढत आहे व भविष्यकाळात ते वाढत जाणार आहे आणि प्रसार माध्यम या संकल्पनेत वृत्तपत्रे, मासिके, ग्रंथ ही मुद्रीत माध्यमे तर नभोवाणी, चित्रपट, दूरचित्रवाणी तसेच उपग्रह व केबल या अमुद्रित साधनांचा समावेश होतो.

प्रसारमाध्यमांचे महत्व:-

1. एकविसाव्या शतकात प्रसार माध्यमांचे महत्व वाढत जाणार आहे व ते होतच आहे.
2. प्रसारमाध्यमांनी नवजीवनात अत्यंत महत्व संपादन केले आहे. वैयक्तिक दृष्ट्या व सामुदायिक दृष्टीने ही माध्यमे विविध प्रकारच्या श्रोते वृंदाची सेवा करतात त्यांच्या पसंतीस उतरण्याचा प्रयत्न करतात.
3. प्रसारमाध्यमे श्रोत्यांच्या आशा, आकांक्षा प्रतिबिंबित करतात त्यांच्या गरजानुरूप आपले कार्यक्रम बदलत राहतात.
4. प्रत्येक माध्यम आपआपल्या परीने लोकांच्या गरजा पूर्ण करताना, आपल्या क्षमतांचा विकास करत आहे तरीच माध्यमांच्या जगात होणा-या नवनवीन तांत्रिक क्रांतीच्या उपयोजनामुळे माध्यमांचे स्वरूप झपाट्याने बदलत आहे.
4. प्रत्येक माध्यमांच्या काही क्षमता आहेत तसेच त्यांच्याकाही मर्यादाही आहेत. वृत्तपत्र हे माध्यम मुद्रीत माध्यम असले तरी त्याला अक्षरांच्या मर्यादा आहेत. निरक्षरांना आव्हान ते करू शकत नाही. माध्यम म्हणजे संदेश असे सुत्र कर्णप्रधान व दृष्टिप्रधान संस्कृतीचा पुरस्कार करतांना आढळते. भारतीय पारंपारिक माध्यमे ग्रामीण भागात अद्यापही आपल्या क्षमतांचे सामर्थ्य टिकवून आहेत. या दोन्ही माध्यमांच्या समन्वयातून भारतीय माध्यमांना पूर्णत्व प्राप्त होवू शकते.